।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नवतत्त्व सार्थ)

प्रश्न १. अ. सही है या गलत लिखिए। **(५)**

१. पुण्य के उदय से आदेय नामकर्म होता है।

२. पुद्गलास्तिकाय के चार भेद हैं।

३. आस्त्रव यह आठवां तत्त्व है।

४. असंज्ञी सम्मूर्च्छिम मनुष्य को छह प्राण होते हैं।

५. कर्म बंध में कारण बननेवाली चेष्टा का नाम क्रिया है।

ब. निम्नलिखित वर्णन से कौन–सी क्रिया है, पहचानिए। **(५)**

१. प्रद्वेष से होने वाली क्रिया

२. माया कपट से लगनेवाली क्रिया

३. जीव हिंसा करने से लगने वाली क्रिया

४. शरीर के व्यापार से लगनेवाली क्रिया

५. स्वयं द्वेष करने से तथा दूसरों में द्वेष उत्पन्न कराने से लगनेवाली क्रिया

क. निम्नलिखित नाम किस तत्त्व में आते हैं और वे किसके भेद है लिखिए। **(५)**

नाम	**तत्त्व**	**किसका भेद**
जैसे – आत्मारामता	**संवर**	**मनोगुप्ति**
१. मनुष्य गति	.....	.....
२. केवल ज्ञान	.....	.....
३. लोकाकाश	.....	.....
४. गुंजा वायू	.....	.....
५. अनशन	.....	.....

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. परमाणु २. स्वाध्याय तप ३. नाराच संहनन नाम कर्म

४. तीर्थसिद्ध ५. प्रज्ञा परिषह ६. पारिणामिक भाव

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब दीजिए। **(२०)**

१. ध्यान किसे कहते हैं? उसके भेदों का स्वरूप लिखिए।

२. मार्गणा किसे कहते हैं? उसके किन्हीं ५ भेदों को स्पष्ट कीजिए।

३. किन्हीं पांच भावनाओं को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

४. स्थावरदशक की प्रकृतियों का स्वरूप लिखिए।

५. अजीव के चौदह भेदों का वर्णन करते हुए स्कन्ध, देश और प्रदेश की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. बंध किसे कहते हैं? उसके स्वरूप को मोदक के दृष्टांत से स्पष्ट करते हुए ८ कर्मों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति बताइए।

२. निम्न गाथा का भावार्थ लिखकर उसे विस्तार से समझाइए।

एगविह-दुविह-तिविहा चउव्विहा पंच छव्विहा जीवा।
चेयण तस इयरेहिं वेय गई करण-काएहिं।।

(खण्ड ख – जैनत्व की झांकी)

प्रश्न ५. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. भ. महावीर के संघ में कितने श्रावक थे?

२. भ. पार्श्वनाथ वर्तमान कालचक्र के कितवें तीर्थंकर थे?

३. बंध के कितने भेद बताये हैं?

४. भगवान ऋषभदेव को कितने पुत्र थे?

५. कितने कारणों से प्राणी नरक में जाता है?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अनेकांतवाद	२. मोक्ष	३. सम्यक् चारित्र
४. गुरु	५. जैन	६. परमात्मा

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब दीजिए। **(१०)**

१. कर्मवाद को स्पष्ट कीजिए।

२. जैन धर्म वेदों का विरोध क्यों करता है, स्पष्ट कीजिए।

३. भ. नेमिनाथ करुणा के अवतार क्यों माने जाते हैं?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. अहिंसा का स्वरूप विस्तार से बताइए।

२. जैन संस्कृति में सेवाभाव को स्पष्ट कीजिए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – १)

प्रश्न क्र. १. अ. निम्नलिखित धातु और शब्दों के यथानिर्दिष्ट रूप लिखिए। **(५)**

मूलशब्द/धातु	लकार/लिङ्ग	विभक्ति/पुरुष	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
१. एतद्	स्त्रीलिङ्ग	पञ्चमी विभक्ति			
२. स्थाली	स्त्रीलिङ्ग	प्रथमा विभक्ति			
३. सज्जन	पुल्लिङ्ग	सप्तमी विभक्ति			
४. क्षिप्	लृट् लकार	मध्यम पुरुष			
५. लिख्	लङ्लकार	प्रथम पुरुष			

ब. निम्नलिखित शब्दों का वर्णविन्यास कीजिए। **(५)**

अ. शिक्षको आ. प्रश्नयोपेतं इ. सौहृदम्

ई. व्युत्पद्यते उ. यादृगिच्छेच्च

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित किन्हीं पांच सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. 'क्' और 'ए' इन वर्णों के उच्चारण स्थान, बाह्य प्रयत्न और आभ्यंतर प्रयत्न लिखिए।

२. क्रमवाचक संख्या विशेषण बनाने के कोई दो नियम सोदाहरण लिखिए।

३. 'काल' किसे कहते है? उसके कितने प्रकार हैं नाम लिखिए।

४. क्रियाविशेषण अव्यय के कितने भेद हैं और कौन-से?

५. सात वारों के नाम संस्कृत में लिखिए।

६. सप्त ककारों के नाम लिखिए।

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथा निर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'जीवने यावदादानं .....' इस सुभाषित को शुद्ध एवं अर्थ सहित लिखिए।

२. 'ऋषि' तथा 'गो' शब्द के सभी विभक्तियों के रूप लिखिए।

३. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

अ. वह कीटक कुछ ऊपर जाकर नीचे गिरता था।

आ. इन दोनों माताओं को एक-एक टुकडा दो।

इ. देशप्रेम का पाठ तुमसे सीखना चाहिए।

ई. वन के पास एक गांव है।

उ. वृद्ध एक उपाय करेगा।

P.T.O

४. 'गर्ज्' धातु के सभी लकारों में रूप लिखिए।

५. निम्नलिखित समय को संस्कृत में लिखिए।

अ. ४.२५ आ. ९.४० इ. १.१० ई. ७.५५ उ. १२.१२

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. सर्वनाम किसे कहते हैं? उसके भेदों का स्वरूप लिखकर 'किम्' सर्वनाम के सभी लिङ्गो और विभक्तियों में रूप लिखिए।

२. संधि किसे कहते हैं, संधि के कितने भेद हैं? स्वरसंधि के सभी भेदों को अपनी भाषा में सोदाहरण लिखिए।

(खण्ड ख – तत्त्वार्थ सूत्र)

प्रश्न ५. अ. सही पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. ..... ये आभ्यंतर तप है। (सामायिक, ध्यान, क्षुधा)

२. संपूर्ण कर्मों का क्षय होना ..... है। (निर्जरा, आस्त्रव, मोक्ष)

३. नाम और गोत्र की जघन्य स्थिति ..... मुहूर्त की है। (८, १२, १५)

४. सामायिक में उत्साह न होना ..... है। (प्रत्यवेक्षण, अनादर, मौखर्य)

५. आसक्तिपूर्वक पदार्थों को रखना ..... है। (कपट, आरंभ, परिग्रह)

ब. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. अजीव द्रव्य कितने हैं?

२. दसवें अध्याय में कितने सूत्र हैं?

३. वेदनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है?

४. देवायु का बंध कितने कारणों से होता है?

५. ज्योतिष्क निकाय के देव कितने प्रकार के हैं?

प्रश्न ६. किसमें, कितनी और कौनसी इन्द्रियां होती है नाम बताइए। (कोई ५) **(१०)**

जैसे – पिपीलिका – ३ – स्पर्शन, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय

१. कृमि २. मनुष्य ३. भ्रमर

४. वनस्पतिकाय ५. देवता ६. वायुकाय

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'नाम–स्थापना द्रव्य–भावतस्तन्न्यास:' इस सूत्र को ससंदर्भ स्पष्ट कीजिए।

२. वैमानिक देवों का स्वरूप बताइए।

३. स्कन्ध की उत्पत्ति कितने प्रकार से होती है, स्पष्ट कीजिए।

४. साता वेदनीय कर्म का आश्रव कैसे होता है?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. किन्हीं छह अणुव्रतों के अतिचारों को स्पष्ट कीजिए।

२. परिषह किसे कहते हैं? उसके भेदों को बताकर कौन–कौन से कर्म में कितने परिषह होते हैं? ६ट्ठें गुणस्थान से लेकर १३वें गुणस्थान तक कितने परिषह होते हैं?

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – २)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में जवाब लिखिए। **(५)**

१. क्षण–क्षण से और कण–कण से क्या मिलाना चाहिए?

२. संस्कारयुक्त वाणी ही किसको सुशोभित करती है?

३. किसके सम शरीर का कोई आभूषण नहीं होता?

४. किसकी आज्ञा अविचारणीय होती हैं?

५. विपत्तियों का कारण क्या है?

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित किन्हीं ५ संधियों का विच्छेद कीजिए। **(५)**

१. दीपकश्चन्द्रः	२. महतामेकरूपता	३. सङ्गादारोहति
४. दीपको रविः	५. धावद्धरिणः	६. एकच्छत्रम्

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ धातु / शब्द रूपों को पहचानिए। **(१०)**

रूप	मूलशब्द/धातु	लिङ्ग/लकार	विभक्ति/पुरुष	वचन
१. असुनवम्	.....	.....	.....	.....
२. अनड्वाहौ	.....	.....	.....	.....
३. रुणधानि	.....	.....	.....	.....
४. अग्निमथोः	.....	.....	.....	.....
५. तिर्यग्भ्यः	.....	.....	.....	.....
६. अत्थ	.....	.....	.....	.....

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१५)**

१. षष्ठी उपपद विभक्ति के नियम स्वरचित उदाहरणों के साथ लिखिए।

२. 'मनो यस्य वशे .....' सुभाषित को शुद्ध एवं अर्थसहित लिखिए।

३. 'मथिन्' एवं 'विभ्राज्' शब्दों के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए।

४. 'लोच्' धातु के परस्मैपद में सभी लकारों में रूप लिखिए।

५. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

अ. परीक्षा के बिना छात्र पढाई नहीं करते हैं।

आ. माता अपने पुत्र पर स्नेह करें।

इ. शिक्षक ने छात्र पर क्रोध किया।

ई. तुम सब मेरे साथ यहां लिखो।

P.T.O

उ. मैं वहां किताबें ले जाऊंगा।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. 'लोभः प्रज्ञानमाहन्ति' इस कथा का भावार्थ अपनी भाषा में लिखते हुए लोभ पर पांच वाक्य संस्कृत में लिखिए।

२. हलन्तसन्धि किसे कहते हैं? उसके सभी भेदों को सोदाहरण लिखिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – १)

प्रश्न क्र. ६. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. सुबोध प्राकृत व्याकरण इस किताब में विशेषण के कितने प्रकार बताएं हैं?

२. श्रीकृष्ण वासुदेव ने कितनी ईंटे लेकर घर के अन्दर रख दी?

३. प्राकृत भाषा में विसर्ग के लिए कितने तरह के नियम है?

४. उच्चारणों के अनुसार व्यञ्जनों के कितने भेद हैं?

५. प्राकृत में कितने कारक होते हैं?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. किसी की हिंसा न करना ही ज्ञान का सार है।

२. सम्यग्दृष्टि पाप का उपार्जन नहीं करता।

३. अरिहंत की शरण ग्रहण करता हूं।

४. ममता का बंधन महाभयंकर है।

५. वह सत्य ही भगवान है।

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं पांच पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. विशेष्य	२. कारक	३. काल
४. व्याकरण	५. महाप्राण	६. संधि

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'बुद्धिमंतो सियालो' इस कथा का भावार्थ लिखकर उससे प्राप्त सीख लिखिए।

२. स्वर परिवर्तन के नियमों को पुस्तक से भिन्न उदाहरणों के द्वारा लिखिए।

३. निम्नलिखित शब्दों के लिए प्राकृत शब्द लिखिए।

अ. चावी	ब. द्वादश	क. प्रज्ञा
ड. दृष्टि	इ. सखी	फ. छाता

४. 'युष्मद्' शब्द के सभी रूपों को लिखिए।

५. धातु की विशेषताओं को लिखिए।

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. स्वर–संधि एवं उसके सभी भेदों को स्वभाषा में लिखते हुए उदाहरण भी लिखिए।

२. प्राकृत भाषा में ध्यान देने योग्य मुख्य बिंदुओं को सोदाहरण लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन १ से ५)

प्रश्न १. अ. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. जीव को कितने अंगों का प्राप्त होना दुर्लभ है?

२. परिषह कितने प्रकार के होते हैं?

३. चतुर्थ अध्ययन में कितनी गाथाएं हैं?

४. अविनीत शिष्य को कितनी उपमाएं दी गयी है?

५. सकाम मरण के कितने भेद हैं?

ब. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. अकाम मरण ४ बार होता है।

२. श्रमण साधक को प्रतिपल-प्रतिक्षण जागरूक रहने की प्रेरणा दी है।

३. तृतीय अध्ययन की ४० गाथा है।

४. डांस, मच्छरों से पीडित होने पर महामुनि राग-द्वेष करें।

५. संयम द्वारा अपनी आत्मा का दमन करना ही श्रेष्ठ है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. निम्नलिखित गाथा का अर्थ लिखिए।

अ. आणा निद्देस करे, गुरूण-मुववाय-कारए।
इंगियागार संपण्णे, से विणीए त्ति वुच्चइ।।

२. निम्नलिखित गाथा का अर्थ लिखिए।

ब. संतिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणंतिया।
अकाम-मरणं चेव, सकाम मरणं तहा।।

३. प्रमाद कितने और कौन-कौन से हैं?

४. किस परिषह को समभाव से सहन न करने पर साधक अज्ञानियों के जैसा हो जाता है?

५. किन स्थानों में साधु स्त्री के साथ बातचीत न करे?

६. सकाम मरण किसका होता है?

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अज्ञान, दर्शन, सत्कार पुरस्कार, अलाभ, याचना परिषह को स्पष्ट कीजिए।

२. उत्तम सुख सामग्री के कितने और कौन-से अंग बताए हैं, स्पष्ट कीजिए।

३. अकाम मरण को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

(खण्ड ख – जैन तत्त्व दीपिका)

प्रश्न ४. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तम्भ		'ब' स्तम्भ
१. ४ क्रोश	–	अ. असंभव
२. झूठा ज्ञान	–	ब. सामायिक व्रत
३. लक्षण का दोष	–	क. १ योजन
४. योग	–	ड. प्रमाणाभास
५. शिक्षाव्रत	–	इ. वचन योग

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ बातों के कितने और कौन–से भेद है बताइए। **(१०)**

१. भावविपाकी कर्म २. अवसर्पिणी काल में आरे ३. पंचेन्द्रिय
४. जीव के असाधारण भाव ५. चारित्र ६. अजीव द्रव्य

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. स्थावर किसे कहते हैं? उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।
२. अंगुल का स्वरूप बताइए।
३. मिथ्यात्व किसे कहते हैं? उसके ५ भेदों को स्पष्ट कीजिए।
४. पक्षाभास के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सिद्धों के भेदों का स्वरूप बताइए।
२. किस–किस गुणस्थान में किस–किस कर्म की उदीरणा, निर्जरा, बंध, उदय और सत्ता होती है, बताइए।

(खण्ड ग – इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ)

प्रश्न ८. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. आ. सिद्धसेन संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे।
२. आत्मारामजी म. सा. खरतरगच्छ परंपरा के थे।
३. लोंकाशाह के पिता का नाम वीरशाह था।
४. जीवजी ऋषि के अनेक शिष्य थे।
५. धर्मसिंह मुनिजी का विचरण क्षेत्र कर्नाटक ही रहा।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. धर्मसिंह मुनिजी के गुरु ने उनकी किस तरह से परीक्षा ली, उन्हें क्या करने के लिए कहा बताइए।
२. देवपाल राजाने आ. सिद्धसेन दिवाकर को 'दिवाकर' उपाधि से विभूषित क्यों किया?
३. आचार्य अमोलकऋषिजी म. सा. के जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
४. आचार्य शीलांक के जीवन को संक्षिप्त में बताइए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. भ. अरिष्टनेमि के जीवन का परिचय दीजिए।
२. लोंकाशाह के पास प्रतिलिपी उतारने का काम कैसे आया और उन्होंने उस कार्य को बंद क्यों कर दिया?

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग ३)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित समास के विग्रह से सामासिक पद बनाकर समास का नाम लिखिए। **(१०)**

समास विग्रह	सामासिक पद	समास नाम
१. त्रयाणां लोकानां समाहारः	.....	.....
२. दश आननानि यस्य सः	.....	.....
३. भेरी च पटह: च	.....	.....
४. समयम् अतीतः	.....	.....
५. विषस्य अभाव:	.....	.....

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए। **(५)**

१. तस्करैः रूप्यकाणि ह्रियन्ते।

२. शिष्याः आचार्यान् वन्दन्ति।

३. अहं तान् पाठान् स्मरामि।

४. श्रमणैः वनं गम्यते।

५. यूयं हसथ:।

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१०)**

१. भवान् सौम्यः। भवान् उच्चशिक्षणार्थं विदेशं गन्तुं इच्छति। पत्रं लिखित्वा स्वमित्रमेषां वार्तां लिखतु।

२. कृदन्त प्रत्ययों से निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

अ. वह भोजन करके घर जाता है।

आ. बोलनेवाला कल प्रवचन देगा।

इ. खेलते हुए बालक को बुलाओ।

ई. तुमने व्याकरण पढना चाहिए।

उ. किसान घोडे को घर ले गया।

३. निम्नलिखित संवाद रिक्त स्थानों की पूर्ति से पूर्ण कीजिए।

पुत्री – अम्ब! ..... (महत्) बुभुक्षा अस्ति।

माता – सुधे! किमर्थं त्वरा?

पुत्री – मम ..... (विद्यालय) वार्षिकोत्सवः अस्ति।

माता – त्वं वार्षिकोत्सवे किं ..... (कृ)?

P.T.O

पुत्री – वृन्दगाने ..... (अस्मद्) अस्मि।

माता – निपुणा खलु ..... (अस्मद्) पुत्री।

सखी – सुधे! कुत्र ..... (अस्)?

पुत्री – अत्र ..... (अस्)। किं वदतु?

सखी – ..... (युष्मद्) अद्य कदा विद्यालयं गच्छसि?

पुत्री – किमर्थम्? त्वम् अपि .....(आगच्छ्) वा?

माता – युवां मिलित्वा कस्मिन्नपि कार्यक्रमे न ..... (अस्) वा?

पुत्री – आवां द्वे अपि ..... (वृन्दगान) रज्जुक्रीडायां च स्वः।

माता – अद्य पुत्र्याः विद्यालये वार्षिकोत्सवः अस्ति। ..... (अस्मद्) शीघ्रं गत्वा पुरतः उपविशामः।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. लृङ्लकार का प्रयोग कब करते हैं यह बताते हुए उससे १५ स्वनिर्मित संस्कृत वाक्य लिखिए।

२. कृदन्त का परिचय एवं इसके भेदों को स्वनिर्मित उदाहरणों के साथ लिखिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – २)

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य परिवर्तन कीजिए। **(५)**

१. एगो धणिओ सामीं कत्थई।

२. सामीणा भिच्चो पेसिज्जउ।

३. सावगेण धम्मो कीरइ।

४. सो गिहं गच्छइ।

५. मया हसिज्जइ।

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित शब्द किस कृदन्त के हैं, पहचानिए। **(५)**

१. पडिअं २. दंसिऊणं ३. पढमाण

४. चिट्ठिअव्वं ५. पणमिउं

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं पांच पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. संबंधक भूतकृदन्त २. वाच्य परिवर्तन ३. भाव वाच्य

४. कृदन्त ५. प्रत्यय ६. वाक्य

प्रश्न क्र. ८. किन्हीं चार सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(२०)**

१. सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कहां और क्यों होता है? अपनी भाषा में सोदाहरण लिखिए।

२. 'विध्यर्थ कृदन्त' का स्वरूप अपनी भाषा में सोदाहरण लिखिए।

३. 'अमंगलो' इस कहानी से आपको क्या सीख मिली, लिखिए।

४. 'जामातृ' शब्द के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए।

५. निम्नलिखित धातुओं से वर्तमान कृदन्त शब्द बनाइए।

हो	अट्ट	लुब्भ	ने	दा
जाण	सुण	खा	हस	ठा

P.T.O

६. निम्नलिखित गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

कुसग्गे जह ओस बिंदुए, थोवं चिट्ठइ लंबमाणए।
एवं मणुयाणं जीवियं, समयं गोयम मा पमायए।।

(खण्ड ग – भावना योग एक विश्लेषण)

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित भावनायें किस भावना का भेद हैं, लिखिए। **(५)**

जैसे – सत्व भावना – जिनकल्प भावना

१. आश्रव भावना २. माध्यस्थ भावना ३. वैराग्य भावना
४. सम्मोही भावना ५. क्षमा भावना

प्रश्न क्र.१०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. जिनकल्प भावनाओं का स्वरूप अपनी भाषा में लिखिए।
२. अशुभ भावना एवं उनके लक्षणों का वर्णन कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण नय तत्त्वालोक)

प्रश्न १. अ. निम्न पदों के कोई २–२ भेद लिखिए। **(५)**

१. समारोप २. प्रतिषेध ३. आप्त

४. पक्षाभास ५. पर्यायार्थिक नय

ब. निम्न वाक्य सप्तभंगी का कौन–सा भंग है, लिखिए। **(५)**

१. मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

२. मेरी बुद्धि उससे अच्छी है पर कह नहीं सकते।

३. मेरे अक्षर अच्छे नहीं है।

४. मेरा वर्ण गोरा भी है, गेहुंआ भी है पर कह नहीं सकते।

५. मैं कल गांव को नहीं जाऊंगा पर कह नहीं सकते अगर कुछ काम निकल गया तो।

क. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत पहचानकर लिखिए। **(५)**

१. बौद्ध मत में हेतु के तीन लक्षण है।

२. संशय का पलडा भारी हो जाता है।

३. जहां तादात्म्य सम्बन्ध हो वहां कार्य हेतु होता है।

४. गुण द्रव्य में अनादि–सान्त होते हैं।

५. नैयायिक प्रमाण का फल प्रमाण से सर्वथा अभिन्न मानते हैं।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. विपरीतैककोटिनिष्टङ्कनं विपर्यय:।

२. स एव दृढतमावस्थापन्नो धारणा।

३. न तु त्रिलक्षणकादि:।

४. तस्य ही वचनमविसंवादि भवति।

५. यथा यत् सत् तद् द्रव्यं पर्यायो वा।

६. पक्षाभासादिसमुत्थं ज्ञानमनुमानाभासम्।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. द्रव्यार्थिक नय को समझाकर उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

२. प्रारम्भक के भेद–प्रभेदों पर प्रकाश डालिए।

३. सामान्य और विशेष रूप पदार्थ किसका विषय है? स्पष्ट कीजिए।

४. क्या शब्द प्रधानरूप से विधि का ही प्रतिपादन करता है? विस्तार से समझाइए।

P.T.O

५. परार्थानुमान किसे कहते हैं? उसमें पक्ष प्रयोग की आवश्यकता होती है क्या? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. सकल प्रत्यक्ष के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए 'अर्हन्त ही सर्वज्ञ हैं' इस बात को सिद्ध कीजिए।

२. क्या ज्ञान स्व व्यवसायी है? अपने जवाब का समर्थन विस्तार से कीजिए।

(खण्ड ख – कर्मग्रन्थ भाग १)

प्रश्न ५. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. जो अवधिज्ञान जन्म से ही होता है उसे ..... कहते हैं।

२. पदार्थ के अव्यक्त ज्ञान को ..... कहते हैं।

३. काल की मर्यादा को ..... कहते हैं।

४. जो जीवन पर्यंत बने रहें वे ..... कषाय हैं।

५. प्रत्येक प्रकृति के ..... भेद हैं।

प्रश्न ६. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परीभाषा लिखिए। **(६)**

१. चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म २. शोक मोहनीय कर्म ३. अपवर्तनीय आयु

४. श्रुतज्ञान

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथा का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. पगइठिइरसपएसा, तं चउहा मोयगस्स दिट्ठंता।
मूलपगइऽट्ठ उत्तरपगइ अडवन्नसय भेयं।।

२. गइजाइतणुउवंगा बंधणसंघायणाणि संघयणा।
संठाणवण्णगंध रसफासअणुपुव्विं विहग गई।।

३. सिरिहरियसमं एयं जह पडिकूलेण तेण रायाई।
न कुणइ दाणाईयं एवं विग्घेण जीवोवि।।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. बन्धन नाम कर्म के ५ भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. पांच निद्राओं का स्वरूप बताइए।

३. असातावेदनीय कर्म को बांधने के कारण बताइए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निम्न गाथा के आधारपर सम्यक्त्व मोहनीय का स्वरूप विस्तार से बताइए।

जियअजियपुण्णपावासवसंवरबंधमुक्ख निज्जरणा।
जेणं सद्दहइयं तयं सम्मं खइगाइबहुभेयं।।

२. श्रुतज्ञान के २० भेदों में से किन्हीं १५ भेदों को स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – दशवैकालिक सूत्र संपूर्ण)

प्रश्न १. अ. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. चतुर्थ अध्ययन का नाम ..... है।

२. राजीमती ने ..... को संयम में स्थिर किया।

३. अनाचीर्ण ..... हैं।

४. छट्ठा आचारस्थान ..... है।

५. सूक्ष्म शरीर वाले जीव ..... है।

ब. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तम्भ		**ब स्तम्भ**
१. विनय समाधि	–	अ. सूक्ष्म का भेद
२. अत्यंत सोनेवाला श्रमण	–	ब. २१ गाथा
३. शर्म का मूल	–	क. सुगति दुर्लभ
४. बीजसूक्ष्म	–	ड. चार उद्देशक
५. स–भिक्खू अध्ययन	–	इ. विनय

प्रश्न २ . निम्नलिखित किन्हीं ५ प्राकृत शब्द का हिंदी में अर्थ लिखकर उसके कितने भेद हैं, बताइए। **(१०)**

१. अणाइण्णं	२. आसव	३. आयारठाण
४. निग्गहणा	५. भासाणं	६. महव्वए

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निम्नलिखित गाथा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए।
जयं भुजतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई।।

२. भ्रमरवृत्ति से साधु की भिक्षावृत्ति की तुलना कैसे की गई है स्पष्ट कीजिए।

३. किन्हीं पांच आचारस्थानों को स्पष्ट कीजिए।

४. रसनेन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय के विषयों में राग–द्वेष न करके समत्वभाव रखने का प्रतिपादन कैसे किया है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. द्वितीय अध्ययन का सारांश लिखिए।

२. साधु–साध्वियों के आहार करने की सामान्य विधी को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन ६ से २०)

प्रश्न ५. अ. जोड लगाइए। (५)

अ स्तम्भ		**ब स्तम्भ**
१. द्रुमपत्र	–	अ. १० समाधि स्थान
२. १४ अवगुण	–	ब. ५ भव साथ में
३. हरिकेशबल मुनि	–	क. अविनीत
४. चित्त और संभूत	–	ड. दसवा अध्ययन
५. ब्रह्मचर्य	–	इ. चाण्डाल कुल

ब. निम्नलिखित प्राकृत शब्द का हिंदी में अर्थ बताइए। (५)

१. एसणा–समिओ २. मुसावाई ३. दुग्गइं

४. अभिणिक्खंतो ५. पुढविकाय

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। (१०)

१. शिक्षा किसे प्राप्त नहीं होती?

२. श्रमण कितने और कौन–से प्रकार के हैं?

३. संजय अध्ययन में कितने चक्रवर्तियों का वर्णन है? उसमें कितने चक्रवर्ती दीक्षित हुए?

४. संसार को दुःखमय क्यों कहा गया है?

५. कमलावती रानी ने राजा से क्या कहा?

६. समय मात्र का भी प्रमाद क्यों नहीं करना चाहिए?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। (१५)

१. बहुश्रुत को कितनी उपमाएं दी है? किन्हीं ५ उपमाओं को स्पष्ट कीजिए।

२. हरिकेशबल मुनि ने ब्राह्मणों को किस प्रकार से यज्ञ करने के लिए कहां?

३. निम्न गाथा को स्पष्ट कीजिए।

जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई।
दो मासकयं कज्जं, कोडीए वि ण णिट्ठियं।।

४. भिक्षु कैसा होना चाहिए उसे स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. मृगापुत्र अध्ययन के आधार पर नरक की वेदनाओं को स्पष्ट कीजिए।

२. ७ वें अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – ४)

प्रश्न क्र. १. अ. निम्नलिखित वाक्यों में से तद्धित शब्द पहचानकर वह किस विभाग का है लिखिए। (५)

वाक्य	तद्धित शब्द	विभाग
जैसे – मौनम् सर्वार्थसाधनम्।	**मौनम्**	**भाववाचक तद्धित शब्द**
१. मदीया शाटिका नीला अस्ति।	.....	.....
२. द्रौपदी द्रुपदस्य पुत्री आसीत्।	.....	.....
३. क्षत्रियवद् ब्राह्मणा: युध्यन्ते।	.....	.....
४. बुद्धे: जाड्यम् अनुचितम्।	.....	.....
५. सर्वदा सत्यं वदनीयम्।	.....	.....

ब. चित्रम् आधृत्य शब्दसूची–सहायतया संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखेयुः। (५)

(शब्दसूची – शकटम्, वृषभौ, गावः, घटः, कुटीराः, पथम्, क्षेत्रम्, वृक्षाः, पर्वताः, तृणानि, ग्वालः)

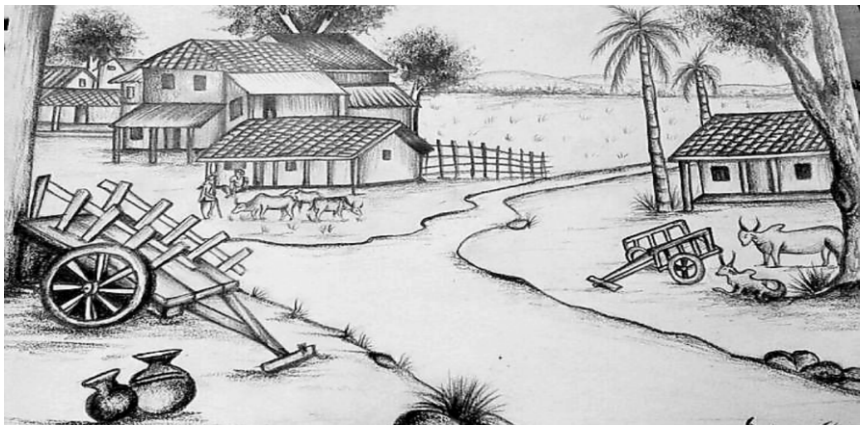

प्रश्न क्र. २. वाक्प्रचारों का हिन्दी में अर्थ लिखकर संस्कृत वाक्य में उपयोग कीजिए। (कोई ५) (१०)

१. गण्डस्योपरि पिटिका संवृत्ता।
२. वरमद्य कपोतः श्वो मयूरात्।
३. शिरः शूलस्पर्शनमपदिशन्।
४. वाच्यः कर्मातिरिच्यते।
५. अल्पविद्या भयंकरी।
६. असिधारामधुलेहः।

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं दो सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। (१०)

१. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? यह बताते हुए सन्नन्त शब्दों से स्वनिर्मित पांच वाक्य संस्कृत में लिखिए।
२. तरतमभाव वाले प्रत्यय कौनसे है? उनसे संस्कृत में स्वनिर्मित पांच वाक्य लिखिए।
३. प्रहेलिका एवं कुटश्लोक का स्वरूप अपनी भाषा में सोदाहरण लिखिए।

P.T.O

४. 'संगत्याः प्रभावः' कथा से क्या सीख मिलती है लिखिए।

प्रश्न क्र. ४. 'मम जीवनस्य लक्ष्यम्' इस विषयपर संस्कृत में निबंध लिखिए। **(१०)**

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – ३)

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित समास के विग्रह से सामासिक पद बनाकर लिखिए। **(५)**

१. नत्थि आदि जस्स तं　　२. जीवा य अजीवा य　　३. कज्जेसु निउणो

४. मुहं कमलं इव　　५. रहस्स पच्छा

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित के कितने भेद हैं, कौन–से? **(१०)**

१. संस्कृत से सादृश्यादि रखने वाले प्राकृत शब्दों के भाग कितने हैं और कौन–से?

२. कर्ता के कितने प्रकार प्रस्तुत किताब में बताए गए हैं और कौन–से?

३. पदों की प्रधानता पर समास के कितने भेद हैं और कौन–से?

४. द्वन्द्व समास के मुख्य भेद कितने हैं और कौन–से?

५. विभक्तियां कितने प्रकार की है और कौन–सी?

६. शब्दों के कितने प्रकार हैं और कौन–से?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं दो सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं, उसके भेदों का स्वनिर्मित उदाहरणों से संक्षेप में परिचय दीजिए।

२. समयबोधक शब्दों का परिचय देते हुए प्राकृत में पांच वाक्य लिखिए।

३. तृतीया विभक्ति के नियमों को स्वरचित वाक्यों के साथ लिखिए।

४. निम्नलिखित गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होन्ति परित्त संसारी।।

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किसी एक सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. प्रेरणार्थक क्रियाओं का स्वरूप लिखकर प्राकृत में स्वनिर्मित १५ वाक्य लिखिए।

२. समास के भेद–प्रभेदों का स्वरूप अपनी भाषा में लिखिए।

(खण्ड ग – ज्ञाताधर्मकथा सूत्र)

प्रश्न क्र. ९. माता–पुत्र की जोड लगाइए। **(५)**

अ – स्तंभ		**ब – स्तंभ**
१. भद्रासार्थवाही	–	अ. प्रद्युम्नकुमार
२. चुलनी देवी	–	आ. मेघकुमार
३. पद्मावती	–	इ. धृष्टद्युम्न
४. रुक्मिणी	–	ई. पुंडरीक
५. धारिणी	–	उ. देवदत्त

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. मल्लिनाथ भगवान के अध्ययन से आपने क्या शिक्षा ग्रहण की? क्यों? स्पष्ट कीजिए।

२. 'नंदीफल' नामक अध्ययन का सार अपने शब्दों में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग २)

प्रश्न १. अ. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. अविरत जीव ..... प्रकार के होते हैं।

२. ग्यारहवें गुणस्थान की स्थिति जघन्य ..... प्रमाण मानी जाती है।

३. बन्ध में ..... कर्मप्रकृतियां होती हैं।

४. इस कर्मग्रंथ में ..... गाथाएं हैं।

५. नववें गुणस्थान के प्रारंभ में ..... कर्मप्रकृतियों का उदय होता है।

ब. निम्नलिखित गुणस्थानों में कितनी प्रकृतियों का उदय होता है बताइए। **(५)**

१. सास्वादन गुणस्थान २. अप्रमत्तसंयत गुणस्थान ३. मिश्र गुणस्थान

४. अयोगी केवली गुणस्थान ५. उपशांत मोहनीय गुणस्थान

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. रसघात २. निर्जरा ३. प्रतिसेवनानुमति ४. उदीरणा

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. नर अणुपुव्वि विणा वा बारस चरिमसमयंमि जो खविउं।
पत्तो सिद्धिं देविंदवंदियं नमह तं वीरं।।

२. अभिनव कम्म गहणं बंधो ओहेण तत्थवीस सयं।
तित्थयराहारग दुग वज्जं मिच्छमि सत्तर सयं।।

३. तित्थुदया उरलाथिर खगइ दुग परित्ततिगछ संठाणा।
अगुरुलहुवन्नचउ–निमिणतेय कम्माइ संघयणं।।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. आठवें गुणस्थान के समय जीव कौन–से पांच वस्तुओं का विधान करता है? संक्षेप में समझाइए।

२. अप्रमत्तसंयत गुणस्थान का स्वरूप बताइए।

३. १० वें गुणस्थान से लेकर १४ वें गुणस्थान पर्यंत कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध होता है स्पष्ट कीजिए।

४. सत्ता का लक्षण बताकर १ से ३ गुणस्थान पर्यंत कितनी प्रकृतियों की सत्ता होती है स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. प्रत्येक गुणस्थान में कितनी कर्म प्रकृतियों की उदीरणा होती है विस्तार से बताइए।

२. अनिवृत्तिबादर संपराय गुणस्थान का स्वरूप विस्तार से बताइए।

P.T.O

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग ३)

प्रश्न ५. अ. जोड लगाइए। (५)

अ स्तम्भ		**ब स्तम्भ**
१. रत्नप्रभा में	–	अ. ४ गुणस्थान
२. छट्ठें गुणस्थान के अधिकारी	–	ब. १०९ प्रकृतियां बन्धयोग्य
३. अपर्याप्त तिर्यंच	–	क. सातावेदनीय का बंध
४. अप्रत्याख्यानावरण कषाय में	–	ड. ३ गुणस्थान
५. १२ वें गुणस्थान में	–	इ. मनुष्य

ब. सही है या गलत बताइए। (५)

१. कार्मण काययोग में ४ गुणस्थान पाये जाते हैं।

२. औदारिक मिश्रकाययोग में सामान्य रूप से १२८ प्रकृतियों का बंध होता है।

३. इस कर्मग्रंथ में २५ गाथा है।

४. कर्मबंध की योग्यता को बन्धस्वामित्व कहते हैं।

५. बन्धयोग्य १५२ प्रकृतियां होती हैं।

प्रश्न ६. निम्न पर्याप्त मनुष्य का बन्धस्वामित्व का तक्ता पूर्ण कीजिए। (१०)

गुणस्थानों के नाम	**बन्धयोग्य प्रकृतियां**	**दर्शनावरणीय**	**मोहनीय**	**आयु**
जैसे– ओघ से	१२०	९	२६	४
१. मिथ्यात्व में	.....	.....	.....	.....
२. अविरत में	.....	.....	.....	.....
३. सूक्ष्मसंपराय में	.....	.....	.....	.....
४. सयोगी केवली में	.....	.....	.....	.....
५. प्रमत्त में	.....	.....	.....	.....

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। (१५)

१. वैक्रिय काययोग और वैक्रिय मिश्र काययोग में कितने गुणस्थान होते हैं और उनमें कितनी प्रकृतियों का बंध होता है?

२. १४ मार्गणाओं के नाम लिखकर किन्हीं ५ मार्गणा के भेद लिखिए।

३. मतिज्ञान में कौन–से गुणस्थान होते हैं स्पष्ट करते हुए उन गुणस्थानों में कितनी प्रकृतियों का बंध होता है?

४. निम्न गाथा को स्पष्ट कीजिए।

अजिणमणुआउ ओहे सत्तमिए नरदुगुच्च विणु मिच्छे।
इगनवई सासणे तिरिआउ नपुंसचउवज्जं।।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. अज्ञान त्रिक में दो या तीन गुणस्थान क्यों माने जाते हैं स्पष्ट कीजिए।

२. निम्न गाथा को स्पष्ट कीजिए।

ओहु पणिंदि तसे गइतसेजिणिक्कार नरतिगुच्च विणा।
मणवयजोगे ओहो उरले नरभंगु तम्मिस्से।।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नन्दी सूत्र)

प्रश्न १. अ. निम्न उदाहरण किसका है, लिखिए। **(५)**

१. भरत २. अ, आ, इ ३. दर्जी

४. चालनी ५. खांसना

ब. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। **(५)**

ज्ञान	विषय विभाग	जघन्य/ उत्कृष्ट	विषय
१. अवधिज्ञान	द्रव्य से	उत्कृष्ट	.....
२. ऋजुमति	काल से	जघन्य	.....
३. केवलज्ञान	क्षेत्र से	–	.....
४. मतिज्ञान	भाव से	–	.....
५. श्रुतज्ञान	क्षेत्र से	–	.....

क. निम्न वर्ण्य विषय किस अंगप्रविष्ट का है, लिखिए। **(५)**

१. क्रियावादी, अक्रियावादी आदि मतों का विवेचन

२. इतिहास, उदाहरण और धर्मकथाओं का समावेश

३. भ. महावीर के १० विशिष्ट श्रावकों का वर्णन

४. अन्तकृत् केवलियों का वर्णन

५. संसार के समस्त दर्शन, समस्त श्रुतज्ञान का समावेश

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(६)**

१. संजम-तव-तुंबारयस्स, नमो सम्मत्त-पारियल्लस्स।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ चक्कस्स।।

२. सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंबू नामं च कासवं।
पभवं कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं तहा।।

३. सुमुणिय-णिच्चाणिच्चं, सुमुणिय-सुत्तत्थधारयं वंदे।
सब्भावुब्भावणया, तत्थं लोहिच्चणामाणं।।

४. जा होइ पगइमहुरा, मियछावय-सीह-कुक्कुडय भूआ।
रयणमिव असंठविआ, अजाणिया सा भवे परिसा।।

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ की परिभाषा लिखिए। **(४)**

१. उपधारणता २. चिन्ता ३. आवर्त्तनता

P.T.O

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. आनुगामिक अवधिज्ञान के भेद-प्रभेदों को समझाइए।

२. अनन्तरसिद्ध केवलज्ञान किसे कहते हैं? उसके किन्हीं ४ प्रकारों को समझाइए।

३. विपुलमति मन:पर्यवज्ञान के स्वरूप का निरूपण कीजिए।

४. द्वादशांगी का संक्षिप्त सारांश लिखकर उसके आराधना-विराधना का फल क्या है, समझाइए।

५. 'लक्षण' उदाहरण के द्वारा वैनयिकी बुद्धि का स्वरूप समझाइए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. भेरी के दृष्टांत से श्रोता के प्रकार का वर्णन कीजिए।

२. पांच ज्ञानों को समझाकर उनके क्रमव्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

(खण्ड ख – भारतीय दर्शन)

प्रश्न ५. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. गीता ..... के सिद्धांत को मानती हैं। (नियतिवाद, कालवाद, कर्मवाद)

२. विषयासक्ति का त्याग ..... व्रत है। (अपरिग्रह, अहिंसा, सत्य)

३. सांख्यदर्शन के रचयिता ..... है। (कपिल, कणाद, वाल्मीकी)

४. ब्रह्म ..... गुणों का भंडार है। (संख्यात, असंख्यात, अनंत)

५. योग का प्रथम अंग ..... है। (नियम, यम, आसन)

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. काल को अस्तिकाय क्यों नहीं कहा गया हैं?

२. अष्टमार्ग कौन कौन-से हैं?

३. किस पिटक में किसका वर्णन मिलता है?

४. सौत्रांतिकों के अनुसार सहकारी प्रत्यय कौन कौन-से हैं?

५. वैशेषिकों के ग्रंथों के नाम लिखिए।

६. सेश्वर सांख्य किसे कहते हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. वाक्य बोध के चार कारण को स्पष्ट कीजिए।

२. योगाभ्यास करते हुए साधक कितनी और कौन-सी सिद्धियां प्राप्त करता है?

३. उपनिषदों में जीव के कितने कोषों का वर्णन है? स्पष्ट कीजिए।

४. मतिज्ञान और श्रुतज्ञान को समझाइए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. न्याय प्रणाली के आवश्यक अंगों को स्पष्ट कीजिए।

२. चार्वाक दर्शन को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ — प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्

सन् २०२२ — समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक) — सम्पूर्णांका: १००

(खण्ड क – लघुसिद्धान्तकौमुदी)

प्रश्न क्र. १. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तंभ		'ब' स्तंभ
१. रामश्चिनोति	–	क. अनुनासिक सन्धि
२. षटत्सन्तः	–	ख. अयादि सन्धि
३. तन्मात्रम्	–	ग. आगम सन्धि
४. महेश्वरः	–	घ. श्चुत्व सन्धि
५. नायकः	–	ङ. गुण सन्धि

प्रश्न क्र. २. निम्न प्रत्याहारों के वर्ण लिखिए। (कोई ५) (५)

१. खर् २. झश् ३. अल्
४. यय् ५. हश् ६. अच्

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं ५ में सन्धि विधायक सूत्र का निर्देश करते हुए सन्धि कीजिए। (१०)

१. उत् + स्थानम् २. गङ्गा + उदकम् ३. मधु + अरिः
४. अमी + ईशा ५. रामस् + टिकते ६. अहः + अहः

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ संज्ञाओं के सूत्र अर्थ सहित लिखिए। (१०)

१. अनुनासिक संज्ञा २. सवर्ण संज्ञा ३. पद संज्ञा
४. उदात्त संज्ञा ५. इत् संज्ञा ६. गुण संज्ञा

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं २ उदाहरणों की ससूत्र सिद्धि कीजिए। (१०)

१. विष्ण इह २. किम्वुक्तम् ३. सन्नच्युतः
४. गङ्गौघ

(खण्ड ख – प्राकृत व्याकरण, द्वितीय पाद तक)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। (कोई ५) (५)

जैसे – कर्णिकारः – कण्णिआरो

१. राजकुलम् २. सौकुमार्यम् ३. आज्ञपनम्
४. व्युत्सर्जनम् ५. वृश्चिकः ६. पर्यस्तम्

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। (कोई ५) **(५)**

१. अइसिरअं २. सव्वंगिओ ३. आवत्तणं
४. जवणिज्जं ५. कुम्हाणो ६. ओप्पेइ

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों के अर्थ और उदाहरण लिखिए। **(२०)**

१. हु-खु-निश्चय-वितर्क-संभावन-विस्मये। २. दृशः क्विप् टक्सकः।
३. लुप्त य-र-व-श-ष-सां श-ष-सां दीर्घः। ४. रुदिते दिन्ना ण्णः।
५. द्य-य्य-र्यां जः। ६. स्वार्थे कश्च।

प्रश्न क्र. ९. निम्न प्राकृत रूपों की संस्कृत में सिद्धि कीजिए। (कोई ३) **(१५)**

१. संजत्तिओ २. जाइमल्लो ३. परोप्परं
४. सेहालिआ ५. सुवण्णिओ

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किन्हीं ३ संस्कृत रूपों की प्राकृत में सिद्धि कीजिए। **(१५)**

१. दृप्तसिंहेन २. अल्पसरित् ३. परिस्थापित
४. स्कंधावार ५. एकादश

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण मीमांसा)

प्रश्न १. निम्नलिखित साध्य सम्बन्धी कौन–सी बाधाएं हैं, लिखिए। **(५)**

१. अग्नि उष्ण नहीं है।

२. धर्म परलोक में दु:खदायी है।

३. मनुष्य के सिर की खोपडी पवित्र है।

४. मेरी माता वन्ध्या है।

५. चन्द्रमा शशी नहीं है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों का हिन्दी में ससंदर्भ अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. प्रज्ञातिशयविश्रान्त्यादिसिद्धेस्तत्सिद्धि:।

२. अज्ञाननिवृत्तिर्वा।

३. तत् द्विधा स्वार्थं परार्थं च।

४. धर्मी प्रमाणसिद्ध:।

५. साध्यनिर्देश: प्रतिज्ञा।

६. तथोपपत्त्यन्यथानुपपत्तिभेदात्।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के सटीक जवाब लिखिए। **(१०)**

१. प्रत्यभिज्ञान का निरूपण कीजिए।

२. दृष्टान्त के स्वरूप को समझाइए।

३. निग्रहस्थान किसे कहते हैं? वे कितने हैं और कौन–से? उनमें से किन्हीं तीन निग्रहस्थान को समझाइए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अन्य दर्शन की अपेक्षा जैन दर्शन मान्य प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण निर्दोष है, यह स्पष्ट कीजिए।

२. प्रमाण मीमांसा ग्रंथ के रचयिता के जीवन पर प्रकाश डालिए।

(खण्ड ख – तत्त्वार्थसूत्र)

प्रश्न ५. निम्न जीवों की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए। **(५)**

१. ग्रह के देवता

२. सानत्कुमार

३. चौथी नारकी

४. मनुष्य

५. चमरेन्द्र

प्रश्न ६. अनुचित शब्द को रेखांकित करके शब्दसमूह क्या है, लिखिए। **(५)**

१. सुख, दु:ख, गति, जीवन

२. सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, किन्नर

३. गर्भज मनुष्य, नारक, देव, एकेन्द्रिय

४. जीवत्व, भव्यत्व, मिथ्यात्व, अभव्यत्व

P.T.O

५. आज्ञा, विषयरक्षण, विपाक, संस्थान

प्रश्न ७. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। **(५)**

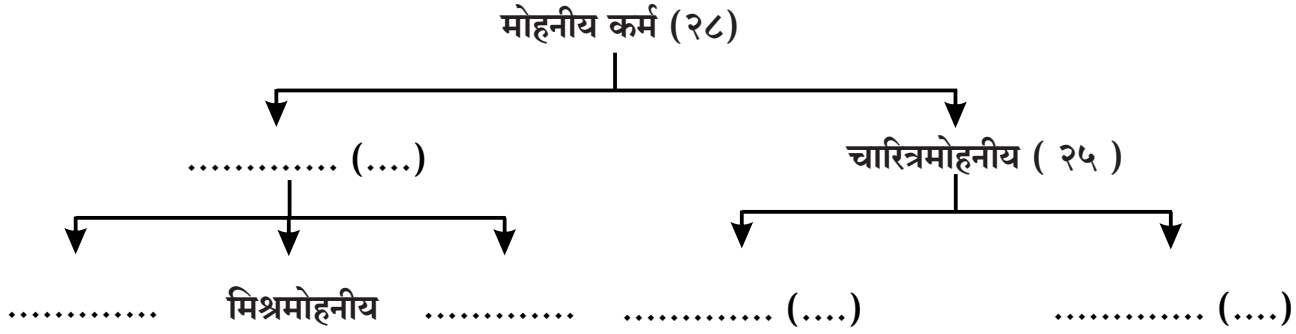

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. हिंसा २. स्तेय ३. परिग्रह

४. कायिकी क्रिया ४. अनाभोग क्रिया ६. आरम्भ क्रिया

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों का ससंदर्भ अर्थ स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

१. उपयोगो लक्षणम्। २. द्रव्याणि जीवाश्च।

३. स आश्रव:। ४. बाह्याभ्यन्तरोपध्यो:।

५. प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधय:।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तृत जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निर्देश, स्वामित्व आदि चौदह प्रश्नों को लेकर सम्यग्दर्शन पर संक्षेप में विचार लिखिए।

२. मोक्ष तत्त्व का निरूपण ग्रंथ के आधार से अपनी भाषा में कीजिए।

। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग ४)

प्रश्न १. अ. निम्न जीवस्थानों में कितने योग होते हैं, बताइए। **(५)**

१. अपर्याप्त बेइन्द्रिय २. पर्याप्त तेइन्द्रिय ३. पर्याप्त संज्ञी
४. अपर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय ५. पर्याप्त बादर एकेन्द्रिय

ब. सही पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. किसी प्रकार के संयम का स्वीकार न करना ..... है। (विरति, अविरति, चारित्र)
२. मार्गणास्थान के भेद ..... हैं। (१२, ११, १४)
३. आठ कर्मों की सत्ता ..... गुणस्थान तक होती है। (ग्यारहवें, पहले, पांचवें)
४. द्रव्य और भाव प्राणों को जो धारण करता है, वह ..... है। (अजीव, प्राणी, जीव)
५. पहले और दूसरे गुणस्थान में ..... का अभाव है। (मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, केवलज्ञान)

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. छसु लेसासु सठाणं, एगिंदि असन्नीभूदगवणेसु।
पढमा चउरो तिन्नि उ, नारयविगलग्गिपवणेसु।।
२. तिरिइत्थिअजयसासण–अनाणउवसमअभव्वमिच्छेसु।
तेराहारदुगुणा ते उरलदुगूण सुरनरए।।
३. सत्तट्ठछेगबंधा, संतुदया सत्तअट्ठचत्तारि।
सत्तट्ठछपंचदुगं उदीरणा सन्नीपज्जत्ते।।

ब. किन्हीं ३ मार्गणा के भेदों में जीवस्थान, गुणस्थान, उपयोग और योग कितने हैं, लिखिए। **(६)**

१. तिर्यंच गति २. तेइन्द्रिय ३. मतिज्ञान
४. कृष्णलेश्या

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. काय मार्गणा के भेदों का स्वरूप लिखिए।
२. जीवस्थानों में बंध पर प्रकाश डालिए।
३. मिथ्यात्व के भेदों को स्पष्ट कीजिए।
४. गुणस्थानों में लेश्या का स्वरूप बताइए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. छह भाव और उनके भेदों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

२. निम्न गाथा को स्पष्ट कीजिए।

गइइंदिए य काये जोए वेए कसाय नाणे य।
संजमदंसणलेसा भवसम्मे सन्निआहारे।।

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २१ से ३६)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब लिखिए। (५)

१. रस में आसक्त प्राणी कौन हैं?
२. राजीमती किसकी पुत्री है?
३. केशीश्रमण किस उद्यान में आये हैं?
४. साधु को चतुर्थ प्रहर में क्या करना चाहिए?
५. सातावेदनीय, असातावेदनीय किस कर्म के भेद हैं?

ब. निम्न प्राकृत शब्द के लिए हिन्दी शब्द लिखिए। (५)

१. परियट्टणा २. निरुम्भइ ३. सव्वण्णु
४. महाकिलेसं ५. चारुभासिणी

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। (१०)

१. आभ्यन्तर तप कितने हैं और कौन-से हैं?
२. आज्ञा रुचि क्या है?
३. कौन कौन-सी अग्नियां हैं और उसे कैसे वश में किया जा सकता है?
४. अरिष्टनेमी भगवान ने कब और कहां दीक्षा ग्रहण की?
५. समाचारी का अर्थ लिखिए।
६. नव तत्त्वों के नाम लिखिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। (१५)

१. ज्ञानसम्पन्नता, दर्शनसम्पन्नता, चारित्रसम्पन्नता से जीव क्या प्राप्त करता है?
२. शुक्ललेश्या के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, लक्षण, स्थिति आदि का वर्णन कीजिए।
३. पृथ्वीकायिक जीवों के भेद, प्रभेद और स्थिति बताइए।
४. भाषा और एषणा समिती का वर्णन कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. चरणविधि अध्ययन को स्पष्ट कीजिए।
२. गर्गाचार्य के शिष्यों का जीवन कैसा था, वर्णन कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सिद्धान्त कौमुदी कारक प्रकरण)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित अव्ययों से स्वनिर्मित वाक्य बनाइए। **(५)**

१. आरभ्य २. साकम् ३. प्रति

४. नमः ५. अधि

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित धातुओं के योग में कौन–सी विभक्ति आती है, बताइए। **(५)**

१. परा + जि २. प्र + इष् ३. दिव्

४. अधि + भू ५. शप्

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अकर्मक धातुओं के योग में कितने शब्दों की कर्म संज्ञा होती है? कौन–से?

२. प्रति, परि, अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा कितने अर्थों में होती है? कौनसे?

३. 'वस्' धातु की कर्मसंज्ञा कितने उपसर्ग के योग में होती है? कौन–से?

४. 'विना' अव्यय के योग में कितनी विभक्तियां आती है? कौन–सी?

५. निर्धार्यमाण समुदाय कितने प्रकार के है? कौन कौन–से?

६. अनीप्सित पदार्थ कितने प्रकार के हैं? कौन–से?

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों के सोदाहरण अर्थ लिखिए। **(१५)**

१. सञ्ज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि। २. राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः।

३. आङ् मर्यादावचने। ४. यतश्च निर्धारणम्।

५. सम्बोधने च।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. किन–किन अव्ययों की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है? कैसे? स्वनिर्मित उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए।

२. 'न लोकाव्ययनिष्ठा खलर्थतृनाम्' इस सूत्र के स्वरूप को स्वनिर्मित उदाहरणों से लिखिए।

(खण्ड ख – हेम प्राकृत व्याकरण तृतीय–चतुर्थ पाद)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। **(५)**

१. सहिअएहिं २. पश्चायावडा ३. अणाइण्णं

४. सुप्पणहा ५. अवरेसिं

P.T.O

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। **(५)**

१. व्युत्सृजामि २. समन्विताम् ३. कथनम्

४. सुजनस्य ५. शशिरेखा

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ क्रियाओं से प्राकृत वाक्य बनाइए। **(१०)**

१. गिण्हिहित्था २. हणिहिसि ३. गमिहामो

४. पविसइ ५. मुज्झन्ति ६. पावीअ

प्रश्न क्र. ९. नीचे दिए किन्हीं ३ सूत्रों के सोदाहरण अर्थ लिखिए। **(१५)**

१. लुगावी क्त भावकर्मसु २. शकेश्चय तर तीर पारा

३. अदेल्लुक्यादेरत आः ४. न वानिदमेतदो हिं

५. गमादीनां द्वित्वं

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. शौरसेनी प्राकृत के लक्षण ससूत्र एवं सोदाहरण लिखिए।

२. किन्हीं ३ गाथाओं के अर्थ लिखकर रेखांकित पद में किस सूत्र से क्या परिवर्तन हुआ है लिखिए।

अ. <u>व्रासु</u> महारिसि एउ भणइ जइ सुइ–सत्थु पमाणु।
मायहँ चलण नवन्ताहं दिवि दिवि गङ्गा–ण्हाणु।।

आ. जिब्भिन्दिउ नायगु वसि करहु जसु अधिन्नइँ अन्नइं।
मूलि विणदुइ तु बिणिहे <u>अवसे</u> सुक्कई पण्णई।।

इ. सिरि चडिआ खन्ति प्फलइं पुणु <u>डालइं</u> मोडन्ति।
तो वि महद्दुम सउणाहं अवराहिउ न करन्ति।।३।।

ई. जीविउ कासु न वल्लहउँ धणु पुणु <u>कासु</u> न इट्ठु।
दोण्णि वि अवसर – निवडअइं तिणसम गणइ विसिट्ठु।।२।।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

षड्दर्शन समुच्चय

प्रश्न १. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. भोजन ..... कर्म के उदय से करते हैं। (वेदनीय, मोहनीय, अन्तराय)
२. वेद से उत्पन्न होनेवाले ज्ञान को ..... कहते हैं। (प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम)
३. बौद्धों के स्तूप ..... होते हैं। (गोल, चौरस, त्रिकोण)
४. वैशेषिक ..... को आकाश का गुण मानता है। (शब्द, रूप, गंध)
५. महापरिमाण ..... प्रकार का है। (१, २, ३)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. नैयायिक	अ. केवलज्ञान के धारक
२. वैशेषिक	ब. लोकायतिक
३. जिनेन्द्र भगवान	क. यौग
४. चार्वाक	ड. सर्वं क्षणिकं
५. बौद्ध	इ. पाशुपत

प्रश्न ३. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. सांख्यलोग कहां पर प्रचुरता से रहते हैं?
२. गोप्यसंघवाले क्या कहे जाते हैं?
३. अभ्यास की क्या होती हैं?
४. तीन इन्द्रियों को प्राप्यकारी कहनेवाला दर्शन कौन-सा?
५. मीमांसक मान्य वेद कैसे हैं?

प्रश्न ४. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. संसारी आत्माओं के कितने भेद हैं?
२. बौद्धों के रत्न कितने हैं?
३. नैयायिक मान्य तत्त्व कितने हैं?
४. भासर्वज्ञकृत न्यायसार की कितनी टीकाएं हैं?
५. वेदनीय कर्म के उदय से कितने परिषह आते हैं?

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं पांच सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. षड्दर्शन के नाम लिखिए।

P.T.O

२. आचार्य गुणरत्न के द्वारा लिखे हुए चार ग्रंथों के नाम लिखिए।

३. बौद्धों के अनुसार प्रमाण की व्याख्या लिखिए।

४. संयुक्त समवेत समवाय क्या हैं?

५. भगवान के अतिशय बताते हुए अपायपगम अतिशय की व्याख्या लिखिए।

६. सांख्यमतानुसार कितने प्रकार के दुःख है, कौन-से?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. सर्वतन्त्र सिद्धांत २. वैकारिक बन्ध ३. अस्तिकाय

४. पुण्य तत्त्व ५. सत्ता सामान्य ६. युक्त योगी प्रत्यक्ष

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. अज्ञानवादियों के ६७ भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. जैन मतानुसार पुद्गल द्रव्य का वर्णन कीजिए।

३. जातियों के भेद बताते हुए किन्हीं ५ जातियों की व्याख्या लिखिए।

४. ग्रंथकार का परिचय लिखिए।

५. चार्वाक कैसे धर्म का खंडन कर किस धर्म को मानता हैं, लिखिए।

६. जैमीनिय मतानुसार सर्वज्ञ का स्वरूप खण्डन-मण्डन के साथ लिखिए।

७. स्त्री को मोक्ष है या नहीं, स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. बौद्धों के अनुमान प्रमाण को स्पष्ट कीजिए।

२. वैशेषिकों के लिंग, वेष और तत्त्वों के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

३. सांख्यदर्शन क्या है, उसके स्वरूप को संक्षेप में बताइए।

४. निम्नलिखित गाथा को स्पष्ट कीजिए।

जैनदर्शन संक्षेप इत्येष गदितोऽनघः।
पूर्वापरपराघातो यत्र क्वापि न विद्यते।।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – आचारांग सूत्र – प्रथम श्रुतस्कन्ध)

प्रश्न १. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. देशविरति श्रावक ..... है। (जागृत, सुप्त, सुप्तजागृत)
२. धर्म को जाननेवाले ..... होते हैं। (कठोर, वक्र, ऋजु)
३. भिक्षु ..... वचनों का प्रयोग करते हैं। (अविरोधी, विरोधी, एकान्त)
४. अज्ञानी पुरुष कामभोगों में ..... हैं। (अनासक्त, सशक्त, आसक्त)
५. तीर्थंकरों ने ..... में धर्म कहा है। (समभाव, विषमभाव, समविषमभाव)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. अचित्तमंतं	अ. निष्पीडन
२. कडासणं	ब. दीर्घरात्रि
३. णिप्पीलए	क. अचेतनावान्
४. दीहरायं	ड. अनात्मप्रज्ञ
५. अणत्तपण्णे	इ. कटासन–संस्तारक

प्रश्न ३. एक वाक्य में जवाब लिखिए। **(५)**

१. किस काय को आगम में दीर्घलोक कहा हैं?
२. परीषहों को सहन करने से क्या होती हैं?
३. भगवान ने किस ऋतु में दीक्षा ग्रहण की?
४. भगवान क्या त्याग कर अचेलक हो गए?
५. भगवान ग्रीष्मऋतु में क्या लेते है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. प्रत्याख्यान परिज्ञा क्या है?
२. शस्त्र किसे कहते हैं?
३. अनगार के लिए कौन–से विशेषण दिए हैं?
४. आर्यदर्शी किसे कहते हैं?
५. खेदज्ञ किसे कहते हैं?
६. निष्कर्मदर्शी के कितने और कौन–से अर्थ बताएं है?

P.T.O

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. पहू एजस्स दुगुंछणाए।

२. लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं।

३. दुरणुचरो मग्गे वीराणं अणियट्टगामीणं।

४. से ण सद्दे ण रुवे ण गंधे ण रसे ण फासे इच्चेयावंति।

५. जे णिव्वुया पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया।

६. एस वीरे पसंसिए अच्चेइ लोयसंजोयं।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(२०)**

१. इंगितमरण के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

२. वृद्ध व्यक्ति कैसी-कैसी स्थितियों से गुजरता है, स्पष्ट कीजिए।

३. शीतोष्णीय अध्ययनानुसार मुनि का स्वरूप लिखिए।

४. क्या साधक एकाकी विचरण कर सकता है?

५. क्या अप्काय जीव है? उसका आरम्भ पाप का कारण क्यों है?

६. मनुष्य कर्म समारंभ क्यों करता है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. भिक्षु के वस्त्र, पात्र आहार संबंधी नियमों को आठवें अध्ययनानुसार लिखिए।

२. मनुष्य किन-किन प्रयोजनों से हिंसा करता हैं, द्वितीयाध्ययनानुसार लिखिए।

(खण्ड ख – राजप्रश्नीय सूत्र)

प्रश्न ८. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत लिखिए। **(५)**

१. आम्रशालवन नाम का नगर था।

२. आठ मंगल द्रव्यों में नंदावर्त भी एक है।

३. कंबोज देशवासियों के द्वारा उपहारस्वरूप सात घोडे भेजे गए।

४. स्नान करानेवाली धाय को मज्जनधात्री कहते हैं।

५. भ. पार्श्वनाथ ने चातुर्याम धर्म की प्ररूपणा की है।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. सूर्याभदेव ने आभियोगिक देव को क्या आदेश दिया?

२. केशीश्रमण सेयविया नगरी में क्यों पधारे?

३. सूर्याभदेव ने भ. महावीर से स्वयं के विषय में क्या सवाल पूछा?

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. 'राजप्रश्नीय सूत्र' इस आगम से हमें क्या बोध मिलता हैं?

२. ज्ञान के स्वरूप को समझाते हुए उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **तृतीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

स्याद्वादमंजिरी

प्रश्न क्र. १. चार पदों में से अनुचित पद चुनकर लिखिए। **(५)**

१. अ. ज्ञानातिशय आ. वचनातिशय इ. आचारातिशय ई. पूजातिशय

२. अ. स्यादस्ति आ. स्यादभक्ति इ. स्यान्नास्ति ई. स्यादवक्तव्य

३. अ. नैगम नय आ. संग्रह नय इ. व्यवहार नय ई. एवंभूत नय

४. अ. आकाश आ. वर्ण इ. गंध ई. रस

५. अ. द्रव्य आ. क्षेत्र इ. काल ई. तप

प्रश्न क्र. २. इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए। **(५)**

जैसे – वैनाशिक दर्शन – बौद्ध दर्शन

१. एक–दूसरे के बिना न रहनेवाले

२. असत्यअमृषा भाषा

३. अवकाशदान देना

४. जानने की क्रिया

५. शिंशिपा वृक्ष

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित दृष्टांत किसकी सिद्धि के लिए दिये हैं? **(५)**

जैसे – दीपक से लेकर आकाश – नित्यता–अनित्यता की सिद्धि के लिए।

१. चन्द्रमां की चांदनी का पान करने की तृष्णा का दृष्टांत

२. अपने पुत्र को मारकर राजा बनने का दृष्टांत

३. एक ही स्त्री माता और वंध्या का दृष्टांत

४. जले हुए बीज से अंकुर नहीं का दृष्टांत

५. बढई और कुठार का दृष्टांत

प्रश्न क्र. ४. जोड लगाइए। **(५)**

अ – स्तंभ		**ब – स्तंभ**
१. मीमांसक दर्शन	–	अ. प्रमेय बारह प्रकार का है।
२. नैयायिक दर्शन	–	आ. कर्म प्राच प्रकार का है।
३. वैशेषिक दर्शन	–	इ. बंध तीन प्रकार का है।
४. चार्वाक दर्शन	–	ई. वेद अपौरुषेय हैं।
५. सांख्य दर्शन	–	उ. परलोक नहीं है।

प्रश्न क्र. ५. कौन–सा दर्शन कितने प्रमाण मानता है और कौन–से? (कोई–५) **(१०)**

१. नैयायिक दर्शन २. चार्वाक दर्शन ३. बौद्ध दर्शन

P.T.O

४. मीमांसा दर्शन ५. सांख्य दर्शन ६. जैन दर्शन

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. 'समय' शब्द का अर्थ कितने प्रकार से किया जाता है और कौन-से?

२. केवल द्रव्यास्तिक नय को माननेवाले दर्शन कितने और कौन-से?

३. शून्यवादी कितने तत्त्वों को अवस्तु मानता है और कौन-से?

४. दर्शनोपयोग कितने प्रकार के हैं और कौन-से?

५. जीव के प्रकार कितने है और कौन-से हैं?

६. विधि कितने प्रकार की है और कौन-सी?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों का सयुक्तिक जवाब लिखिए। **(३०)**

१. 'प्रपञ्चो मिथ्यारूपः प्रतीयमानत्वात्' यह पक्ष अनुमान से कैसे बाधित है लिखिए।

२. वासना और क्षणसंतति परस्पर भिन्न है या अभिन्न सयुक्तिक स्पष्ट कीजिए।

३. सप्तभंगी के आठ दोष कौन-से बताये है? क्या वे सही है स्पष्ट कीजिए।

४. चार अतिशय एवं उसके विशेषणों की सार्थकता अपने शब्दों में लिखिए।

५. वेदविहित हिंसा, हिंसा है या अहिंसा अपने शब्दों में लिखिए।

६. छल, जाति, निग्रहस्थान ये तत्त्व हैं या अतत्त्व स्पष्ट कीजिए।

७. अर्थनय कितने हैं और कौन-से? उनका स्वरूप समझाइए।

८. 'सत्' की परिभाषा एवं स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न क्र. ८.निम्नलिखित किसी १ दर्शन की मान्यता अपने शब्दों में लिखिए। **(१५)**

१. वैशेषिक दर्शन २. बौद्ध दर्शन।

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. जैन दर्शन द्वारा मान्य प्रमाण कितने और कौन-से? उनके सभी भेद-प्रभेदों का स्वरूप लिखिए।

२. नैयायिक ने कितने पदार्थ माने हैं? कौन-से? उनका स्वरूप लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **तृतीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

(खण्ड क – जैन तत्त्व प्रकाश)

प्रश्न १. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (५)

१. ..... प्रकृतिवाला गंभीर और मंदबुद्धि होता है।

२. प्रत्येक वनस्पति में उत्पत्ति के समय ..... जीव पाये जाते हैं।

३. शुद्धोपयोगपूर्वक की हुई धर्मक्रिया ..... का कारण होती हैं।

४. प्रेष्यारम्भत्याग प्रतिमा ..... महीने तक होती है।

५. सम्यक्त्व धर्मवृक्ष का ..... है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। (१०)

१. आक्रोश परीषह किसे कहते हैं?

२. कुप्रावचनिक आवश्यक किसे कहते हैं?

३. वेदक सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

४. अलसिया का उत्पत्ति स्थान और कार्य लिखिए।

५. निकट भव्य जीव का स्वरूप समझाइए।

६. पुद्गल परावर्तन कितने प्रकार के हैं, कौन-से?

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। (१०)

१. वाचना सम्पदा का अर्थ और भेद लिखिए।

२. सकाम-मरण के पांच गुणनिष्पन्न नाम कौन-से हैं?

३. संहनन की व्याख्या और भेदों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. १० रुचि का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

२. धर्मध्यान के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली – भाग १)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब दीजिए। (५)

१. कमलों के विकास में कौन निमित्त कारण है?

२. मनुष्य का मूल आहार क्या था?

३. पं. नीरज जैन किस भाषा में कविता बनाते हैं?

P.T.O

४. डॉ. हेमप्रज्ञाजी के पिता का नाम क्या है?

५. भ. महावीर के निवार्ण से पहले कितने गणधर मोक्ष में गये थे?

ब. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. दिगम्बर परम्परा ..... आगम मानती है।

२. समय और स्थिति निरंतर ..... रहती है।

३. भोग ..... का कारण है।

४. भ्रमर ..... रस का पान करते हैं।

५. ऋषभदेव की पुत्रियां ब्राह्मी और ..... थी।

प्रश्न ६. जोड लगाईए। **(५)**

अ स्तंभ	**ब स्तंभ**
१. आचार्य हस्तीमलजी म. का जन्म	अ. ६ जनवरी १९५३
२. श्री दुलीचन्दजी जैन का जन्म	ब. १३ सितम्बर १९३४
३. श्री हेम प्रज्ञाश्रीजी का जन्म	क. १३ जनवरी १९११
४. नरेन्द्रकुमार भानावत का जन्म	ड. १६ नवम्बर १९२२
५. कन्हैयालालजी लोढा का जन्म	इ. १ नवम्बर १९३६

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. भोजन के दोष बताते हुए निमित्त दोष की व्याख्या लिखें।

२. अंगबाह्य आगम किसे कहते हैं?

३. गणावच्छेदक के कार्य लिखें।

४. पं. सुखलालजी संघवी को कौन-सी उपाधि प्राप्त हुई?

५. सामायिक की शिक्षाएं कितनी और कौन-सी हैं?

६. तिलोकऋषिजी म. सा. की किन्हीं चार रचनाओं के नाम लिखिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ पर टिप्पणी लिखिए। **(१०)**

१. नवकार मंत्र से लाभ

२. श्रावक धर्म की आचार संहिता

३. अनुभाग बंध

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब दीजिए। **(१०)**

१. श्रमण गणों में कितने व्यवहार होते हैं, विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

२. तिलोकऋषिजी म. सा. ने कौन-कौन से वैरागी बताये हैं?

३. सामायिक में मनशुद्धि का क्या स्थान है?

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. जैन परंपरा में पर्यावरण का क्या स्थान है, विस्तार से समझाइए।

२. करण क्या है? उसके भेदों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

॥ ॐ अर्हम्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **तृतीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – वद्धमान चरियं)

प्रश्न क्र. १. स्वप्नों को क्रम से लगाइए। **(५)**

१. कलश दर्शन २. सूर्य दर्शन ३. माला दर्शन
४. ध्वजा दर्शन ५. चन्द्र दर्शन

प्रश्न क्र. २. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. भगवान महावीर के श्रमण वर्ग में प्रमुख कौन थे?
२. भगवान महावीर के कुल कितने वर्षावास हुए?
३. भगवान को महावीर यह नाम किसने दिया?
४. भगवान महावीर ने दीक्षा किस वन में ली?
५. वज्रपाणी किसका अपर नाम है?

प्रश्न क्र. ३. नीचे लिखे परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। **(५)**

णमोत्थूणं अरहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर-पुंडरियाणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहियाणं, लोगपइवाणं लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मणायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं, दीवोत्ताणं सरण गई-पइट्ठाणं, अप्पडिहयवरणाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं, जिण्णाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह मपुणरावित्ति – सिद्धिगइ – णामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं जियभयाणं।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१०)**

१. जे के इमे अगारत्था, मीसीभावं पहाय से झाइ।
पुट्ठोवि णाभिभासिंसु, गच्छइ णाइवत्तइ अंजू।।
२. णच्चाणं से महावीरे, णो विय पावगं सयमकासी।
अण्णेहिं वा न कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था।।
३. जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारु पवायंते।
तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवायमेसंति।।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. भगवान महावीर के दीक्षा का एवं साधना का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
२. 'उवहाण सुयं' के द्वितीय उद्देश्यक का सार अपनी भाषा में लिखिए।

P.T.O

(खण्ड ख – संस्कृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ६. किसी १ विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) **(१५)**

१. विद्या विहिना पशुभिः समाना

२. प्रमादोऽस्माकम् शत्रुः

३. श्रद्धायाः दुर्लभता

प्रश्न क्र. ७. सूचना –निम्नलिखितं परिच्छेदं पठित्वा सूचनानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। **(१५)**

त्यागः आर्यसंस्कृतेः मौलः पाठः। भोगः अनार्यसंस्कृतेः मूलभूतः। महामहिमावता श्रीमताऽऽदिनाथेन संस्थापिताया आर्यसंस्कृतेः मोक्षदत्वं परम्परया सद्यो निरन्तरं निरन्तरायं नितान्तम् आनन्ददत्वं च यदस्ति, तत्रैतदेव हेतुर्मौलः, आर्यसंस्कृतिर्हि त्यागप्रधाना।

आनन्दो भोगेनापि जायते किन्तु जघन्यकक्षाकोऽसौ, निन्दनीयोऽसौ, त्यागजनित आनन्दस्तु परमप्रकृष्टः प्रशस्तश्च ज्ञानिभिः। साधवस्तु समग्रस्वेहलोकस्यैव त्यागं अधि कृत्वा परमत्यागि जीवनं जीवन्ति, अतः समस्तजनतानाम् आदरसम्मानौ सहजतयैव प्राप्नोति मुनिः मुनिसमाजेऽपि यज्जातीयानामधिकौ तपस्त्यागौ, ते समाजस्यात्यधिकपूज्या भवन्ति चापि।

न हि संसारिभिः सर्वथा त्याग आचरितुं शक्यः परन्तु सर्वस्वत्यागं लक्ष्यीकृत्यैते शक्यत्यागमाचरन्तो यथाऽऽनन्देन जीवेयुः, तथा बोधं ददाति आर्यसंस्कृतिः।

आर्या हि त्यागतृषालवः, न्यूनातिन्यूनं स्वीकार्य्यम्, श्रेष्ठाति श्रेष्ठमत्यधिकं च दातव्यमित्येषा ह्यस्ति विचारसरणिः। अत्यधिकमर्जनीयं यथा सुखमुपभोक्तुं शक्येत इति विचारयन्त्यनार्या असंस्कृताश्च। परन्तु किमधिकार्जनक्लेशेन? यदपि च सहजायासेन सुलब्धं तदपि व्ययीक्रियतां हीनेषु च पात्रेषु च त्यागिषु च भिक्षुकेषु च।

दरिद्रः कः? पुराणादिपठितः उञ्छवृत्तिजीवी महाविद्वान् भवस्वरूपविद् ज्ञानी सः गृहस्थब्राह्मणः, यद्वा महत्सु महालयेषु भ्राजमानयानवाहनेषु सत्स्वपि सर्वभौतिकसामग्रीसारेषु मनागपि त्यागं वा दानं वाऽनाचरन्तः, किन्तु अधिकाधिकं भोगसामग्रीणाम् अर्जने संरक्षणे संवर्धने च दिवानिशं व्यापृतमनसः तथाकथित श्रीमन्तः?

आर्याः पुरातनकालादेव त्यागविचारधाराभाविताः शिक्षणदानं, जलदानम्, अन्नदानं, चिकित्सां च विना मूल्याऽऽदानं कृतवन्तः, प्रकृत्या अङ्गं भूत्वा जीवितवन्तः, किं प्रकृतिरुष्मप्रदानस्य शीतवायुलहरीदानस्य सस्यजीवतदायकजलवर्षणस्य कदापि मूल्यं मार्गितवती? किं तट्या पानीयस्य, वृक्षेण फलानां, भूम्या सस्योत्पत्तेः, सागरेण नौकातारणस्य, आकाशेनावकाशदानस्य, कूपेन तृषातृप्तेः, वायुना शैत्यदानस्य, वह्निनोष्णतायाः कदाचित्कोऽपि करो वा मूल्यं वा स्वीकृतम्। एते विना मूल्यं त्यागं कुर्वन्तीत्यत विज्ञा नदीं मातरं, भूमिं जननीं, वृक्षं च देवतां वदन्ति।

प्रकृत्या स्व प्रकृतिरेव त्यागः, न काऽपि प्रतिप्राप्त्यपेक्षा, अतः परापूर्वकालादार्यजना देवतेव पूजिताः, पूज्यन्ते, पूजिष्यन्ते च समस्तेनापि संसारेण। नैकेऽत्र अटिता वयम्, देशविदेशेषु चरामः, कुत्रचित्स्थापत्यं सुन्दरम्, कुत्रचित्स्वच्छता चार्वी कुत्रचिच्छिल्प–चित्र–ललितकला वर्या, कुत्रचिदनेके धनार्जनावसराः शोभनाः, परन्तु आर्यदेशे तु तत्रत्या जना आर्याः सुन्दराः, सौन्दर्यं वसति न तेषां देहे वा गेहे वा वस्त्रेषु वा वसनेषु वा किन्तु सुन्दरतमाऽऽस्ते तेषामार्यी चार्वी विचारधारा याऽऽस्ते त्यागपरिपूता, त्यागप्रधाना। अर्पणशीला एते अभ्यागतस्यातिथेर्याचकस्य भिक्षुकस्य स्वागतं वदन्ति। स्वमहेच्छानां त्यागं कृत्वाऽपि अन्येभ्य आनन्दं ददति, भोगार्थं नैव किन्तु त्यागाय बलिदानाय स्वार्पणाय चाऽहमहमिकां प्रवर्तमाना एते मननीया मान्या आर्या जनाः।

P.T.O

सूचना – एकस्मिन् शब्द उत्तराणि लिखेयुः। **(५)**

१. अस्य परिच्छेदस्य कृते सम्यक् शीर्षकः लिखतु।

२. के त्यागं कृत्वा परमत्यागि जीवनं जीवन्ति?

३. कुत्र चार्या, विचारधारायाः सौन्दर्यं वसति?

४. वायुना कस्य मूल्य न स्वीकृतम्?

५. आर्यसंस्कृतेः संस्थापकः कः?

सूचना – सन्धि–विच्छेदः कुर्युः। **(५)**

१. विचारयन्त्यनार्या २. कुत्रचिच्छिल्पम् ३. तत्रैतदेव

४. समग्रस्वेहलोकस्यैव ५. आनन्दो भोगेनापि

सूचना – व्याकरणानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। **(५)**

१. 'दातव्यम्' अस्मिन् पदे कः धातुः? कः प्रत्ययः? तथैव एतत् पदं कृदन्तम् उत तद्धितान्तम्?

२. 'कृतवन्तः' अस्य पदस्य का विभक्तिः, किञ्च वचनमस्ति?

३. 'मनागपि' अस्मिन् पदे कति पदानि सन्ति? ते के?

४. 'दिवानिशं' अस्मिन् पदे कः समासः वर्तते?

५. 'लब्धम्' इति पदम् केन प्रत्ययेन निर्मितम्?

(खण्ड ग – प्राकृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ८. किसी १ विषय पर प्राकृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) **(१५)**

१. माणुसत्तं खु दुल्लहं।

२. तवसा होइ निज्जरा।

३. अप्पाणं सरूवं।

प्रश्न क्र.९. सूयणा – अहोलिहिअं निबन्धं पढिऊण पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। **(१५)**

मगहमंडलमंडणभूओ धणधन्नसमिद्धो सालिग्गामो नाम गामो। तत्थ पुप्फसालगाहावई तस्स य फलसालो नाम पुत्तो अहेसि। पयइभद्दओ पयइविणीओ परलोगभीरु य। तेण धम्मसत्थपाढयाओ सुयं। जो उत्तमेसु विणय पउंजइ सो जम्मंतरे उत्तमुत्तमो होइ। तओ सो ममेस जणओ उत्तमो ति सव्वायरेण तस्स विणए पवत्तो। अन्नया दिट्ठो जणओ गामसामिस्स विणयं पउंजंतो। तओ एत्तो वि इमो उत्तमो त्ति जणयमापुच्छिऊणं पवत्तो गामसामिमोलग्गिउं। कयाइ तेण सद्धिं गओ रायगिहं। तत्थ गामाहिवं महंतस्स पणामाइ कुणमाणमालोइऊण इमाओ वि एस पहाणो त्ति ओलग्गिओ महंतयं।

तं पि सेणियस्स विणयपरायणमवलोइऊण सेणियमोलग्गिउमारद्धो, अन्नया तत्थ भगवं वद्धमाणसामी समोसढो। सेणिओ सबलवाहणो वंदिउं निग्गओ। तओ फलसालो भगवंतं समोसरणलच्छीए समाइच्छियं नियच्छंतो पविम्हिओ। नूणमेस सव्वुत्तमो जो एवं नरिंदविंददाणविंदेहिं वंदिज्जइ, ता अलमन्नेहिं। एयस्स चेव विणयं करेमि। तओ अवसरं पाविऊण खग्गखेडमकरो चलणेसु निवडिऊण विन्नविउं पवत्तो। भयवं! अणुजाणह, अहं भे ओलग्गामि। भगवया भणियं, भद्द! नाहं खग्गफलगहत्थेहिं ओलग्गिज्जामि, किंतु रओहरणमुहपोत्तियापाणीहिं। जहा एए अन्ने ओलग्गंति। तेण भणियं जहा तुब्भे आणवेह तहेवोलग्गामि। तओ जोग्गो त्ति भगवया पव्वाविओ, सुगइं च पाविओ। एवं विणीओ धम्मारिहो होइ त्ति।

P.T.O

सूयणा – एगे सद्दे पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। **(५)**

१. जो उत्तमेसु विणय पउंजइ सो जम्मंतरे उत्तमुत्तमो होइ त्ति केन कहीअ?

२. गामाहिवं कस्स पणामाइ कुणंतं फलसाहो आलोयइ?

३. पुप्फसालगाहावईस्स पुत्तस्स नाम किं अत्थि?

४. धणधन्नसमिद्धो गामो को अत्थि?

५. णयरे को समोसढा?

सूयणा – इमाण कए पाइयभासाए को सद्दो अत्थि कहाओ चिणिऊण लिहउ। **(५)**

१. गांव प्रमुख २. गिरकर ३. भवांतर

४. पिताजी ५. हाथ

सूयणा – फलसालो कस्स–कस्स सेवा (ओलग्गिउं) आरद्धो कमेण लिहउ। **(५)**

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

प्रज्ञापना सूत्र

प्रश्न १. अ. निम्न जीवों में दिए हुए उपयोग के कितने भेद हैं, लिखिए। **(५)**

जीव का नाम	उपयोग (साकार/अनाकार)	भेद
१. मनुष्य	साकार	.....
२. द्वीन्द्रिय	अनाकार	.....
३. चतुरिन्द्रिय	साकार	.....
४. अप्कायिक	साकार	.....
५. ज्योतिष्क देव	अनाकार	.....

ब. निम्न ज्ञान के भेदों में कौन किनसे अल्प, बहुत, तुल्य अथवा विशेषाधिक है, लिखिए। **(५)**

१. मतिज्ञान २. श्रुतज्ञान ३. अवधिज्ञान
४. मन:पर्यव ज्ञान ५. केवलज्ञान

क. निम्न पर्याय में जीव उत्कृष्ट कितने काल तक रहता है, लिखिए। **(५)**

१. नारक नारक पर्याय में
२. पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याय में
३. वनस्पतिकायिक वनस्पतिकायिक पर्याय में
४. पुरुषवेदक पुरुषवेदक पर्याय में
५. पद्मलेश्यावान पद्मलेश्यावान पर्याय में

ड. निम्न स्थानों से निकलकर जीव मनुष्य भव में क्या प्राप्त कर सकता है, लिखिए। **(५)**

जैसे – सौधर्मकल्पक देव – तीर्थंकर पद

१. शर्कराप्रभा के नारकी २. तम:प्रभा के नारकी ३. पृथ्वीकायिक जीव
४. चतुरिन्द्रिय जीव ५. तमस्तम:प्रभा के नारकी

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. आहार संज्ञा २. परिग्रह संज्ञा ३. मान संज्ञा
४. लोक संज्ञा ५. ओघ संज्ञा ६. भय संज्ञा

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. श्रोत्रेन्द्रिय का परिमाण जघन्य-उत्कृष्ट कितना है?
२. द्रव्येन्द्रियां कितनी और कौन-सी हैं?

P.T.O

३. चक्षुरिन्द्रिय का परिमाण जघन्य–उत्कृष्ट कितना है?

४. अपराजित अनुत्तर विमान के देवत्व में अतीत, बद्ध और पुरस्कृत द्रव्येन्द्रियां कितनी हैं?

५. स्पर्शनेन्द्रिय का परिमाण जघन्य–उत्कृष्ट कितना है?

६. एक नैरयिक में अतीत, बद्ध और पुरस्कृत द्रव्येन्द्रियां कितनी हैं?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. वचन कितने प्रकार के कहे गए हैं? कौन–से? स्पष्ट कीजिए।

२. पांच प्रकार के शरीरों की व्याख्या लिखकर चौवीस दण्डकवर्ती जीवों में शरीर की प्ररूपणा कीजिए।

३. कषाय पद का निरूपण अपनी भाषा में कीजिए।

४. विकलेन्द्रियों की प्रयोग सम्बन्धी प्ररूपणा अपनी भाषा में कीजिए।

५. सात प्रकार के समुद्घात के काल का निरूपण करके चौवीस दण्डकों में समुद्घात की संख्या को स्पष्ट कीजिए।

६. देव गति में अवधिज्ञान से जानने–देखने की क्षेत्र मर्यादा का प्रतिपादन कीजिए।

७. औदारिक शरीर में प्रमाण द्वार का निरूपण कीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. आर्य किसे कहते हैं? उसके भेद–प्रभेदों को विस्तार से समझाइए।

२. व्युत्क्रान्तिपद का सार अपनी भाषा में लिखिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. लेश्यायुक्त चौवीस दण्डकवर्ती जीवों की उत्पाद–उद्वर्तन की प्ररूपणा कीजिए।

२. विविध कर्मों के विभिन्न अनुभवों का निरूपण कीजिए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – योगदर्शन तथा योगविंशिका)

प्रश्न १. अ. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। **(५)**

१. योगसूत्र वृत्ति ..... सिद्धान्त के आधार पर लिखी गई। (सांख्य, जैन)

२. योगविंशिका के टीकाकार की बुद्धि ..... है। (बहुश्रुतगामिनी, अल्पश्रुतगामिनी)

३. कामशास्त्र का भी आखिरी उद्देश्य ..... है। (मोक्ष, संसार)

४. भारतवर्ष की सभ्यता ..... में उत्पन्न हुई। (नदियों, अरण्य)

५. योग का कलेवर ..... है। (एकाग्रता, ध्यान)

ब. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. प्रशम	अ. अनिष्ट फलदायक
२. ऊर्ण अर्थात्	ब. आलम्बनसहित
३. असदनुष्ठान	क. काम–क्रोध की शान्ति
४. सालम्बन ध्यान	ड. ८० भेद
५. योग के कुल भेद	इ. वर्ण

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. धर्मढोंगी गुरुओं ने धर्म का प्रवर्तन कैसे कराया हैं?

२. योगविषयक किन्हीं चार ग्रंथों के नाम और उनके रचयिता बताइए।

३. रामायण, महाभारत के पात्रों का वर्णन कीजिए।

४. वर्णविभाग के उद्देश्य बताइए।

५. विघ्न कितने प्रकार के हैं? कौन–से?

६. अपुनर्बंधक, सकृद् बन्धक किसे कहते हैं?

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों /गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१५)**

१. विशेषाविशेष लिङ्गमात्रा लिङ्गानि।

२. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।

३. क्षणप्रतियोगी परिणामापरान्त निर्ग्राह्य: क्रम:।

४. इहरा उ कायवासियपायं, अहवा महामुसावाओ।
ता अनुरूवाणं चिय, कायव्वो एयविन्नासो।।

P.T.O

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. योगदर्शन के तीसरे पाद का वर्णन कीजिए।

२. योग के पाँच भेदों का वर्णन कीजिए।

(खण्ड ख – ध्यानशतक)

प्रश्न ५. अ. सही है या गलत, बताइए। **(५)**

१. आर्तध्यान को मोक्ष का बीज कहा गया है।

२. मृषानुबन्धी रौद्रध्यान का तीसरा भेद है।

३. ध्यान तप का प्रकार है।

४. ध्यानशतक के रचयिता जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण है।

५. प्रमत्तसंयत रौद्रध्यानी होता है।

ब. एक शब्द में जवाब दीजिए। **(५)**

१. किसकी उपलब्धि संवर एवं निर्जरा पूर्वक होती है?

२. रौद्रध्यानी किसमें प्रवृत्त रहता है?

३. सम्यक्त्व परिकर्म का प्रारम्भ किससे हुआ है?

४. किससे संसार समुद्र को पार करना संभव है?

५. ध्यान में चित्त कैसा होता है?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अनिष्ट संयोग आर्तध्यान क्या है?

२. ध्यान के लिए कौन-कौन से आसन बताएं है?

३. शुक्ल ध्यान कौन-कौन कर सकता हैं?

४. आर्तध्यान कितने गुणस्थानों में पाया जाता है, क्यों?

५. स्तेयानुबंधी रौद्रध्यान क्या है?

६. रौद्रध्यानी किस गति में जाता है, क्यों?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब दीजिए। **(१५)**

१. रौद्रध्यान के लक्षण कौन कौन-से है, स्पष्ट कीजिए।

२. धर्मध्यान के आलंबन कौन कौन-से है, स्पष्ट कीजिए।

३. ध्यानाभ्यास की भूमिका में कौन-कौन सहायक बनते हैं?

४. आर्तध्यान के लक्षण लिखिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. धर्मध्यान के चार विचयों को विस्तार से समझाइए।

२. शुक्लध्यान के स्वरूप को संक्षेप में समझाइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

सूत्रकृतांग सूत्र

प्रश्न १. अ. निम्न अध्ययन के कितने उद्देशक हैं, लिखिए। (५)

१. समय २. स्त्रीपरिज्ञा ३. वैतालीय

४. नरक विभक्ति ५. उपसर्ग परिज्ञा

ब. निम्न वाक्य सही है या गलत, लिखिए। (५)

१. वैशेषिकों का मत है, सभी पदार्थ सर्वथा नित्य है।

२. बौद्धों का मत है, पांचों स्कन्ध कूटस्थ नित्य है।

३. सांख्य दर्शन आत्मा को स्वतन्त्र कर्ता मानता है।

४. उत्तर मीमांसा का मत है, इस जगत् में सब कुछ ब्रह्मरूप है।

५. चार्वाक दर्शन का मत है, पंचमहाभूतों के विनाश से आत्मा का विनाश होता है।

क. निम्न कौन कौन–से सूत्र सुशील साधक के आचार–विचार सूत्र है, पहचानकर लिखिए। (५)

१. ज्ञातपिण्ड द्वारा निर्वाह करे।

२. स्त्रीसंग से दूर रहे।

३. विषयभोगों में आसक्त रहे।

४. अप्रतिबद्ध विहारी हो।

५. तपस्या के साथ पूजा–प्रतिष्ठा की कामना न करे।

६. पूर्वकृत पापों का त्याग करने की इच्छा न करे।

७. संयमयात्रा को निराबाध चलाने के लिए आहार करे।

८. कर्मशुत्रओं का दमन करे।

ड. कोष्ठक में दिए शब्दों को लेकर निम्न वाक्यों को पूर्ण कीजिए। (५)

(आत्मतत्त्व, परिग्रह, हिंसा, धर्म, जीवलोक)

१. समग्र लोक में किसी भी जीव की ..... न करें।

२. मोक्ष की दृष्टि रखकर ..... का आचरण करें।

३. ..... रहित हो।

४. ..... के अधीन न हो।

५. एकमात्र ..... पर श्रद्धा रखें।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ गाथाओं का अर्थ लिखिए। (१०)

१. आदाय बंभचेरं च, आसुपण्णे इमं वयिं।

P.T.O

अस्सिं धम्मे अणायारं, नायरेज्ज कयाइ वि।।

२. जे धम्मं सुद्धमक्खंति, पडिपुण्णमणेलिसं।
अणेलिसस्स जं ठाणं, तस्स जम्मकहा कुतो।।

३. गंथं विहाय इह सिक्खमाणो, उट्ठाय सुबंभचेरं वसेज्जा।
ओवायकारी विणयं सुसिक्खे, जे छेए विप्पमादं न कुज्जा।।

४. अहो य रातो य समुट्ठितेहिं, तहागतेहिं पडिलब्भ धम्मं।
समाहिमाघातमझोसयंता, सत्थारमेव फरुसं वयंति।।

५. सुविसुद्धलेस्से मेधावी, परकिरियं च वज्जए णाणी।
मणसा वयसा कायेणं, सव्वफाससहे अणगारे।।

६. किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम दीहरायं।।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अतिपरिचय को किसकी उपमा दी है?

२. 'वीर्य' अध्ययन का वर्ण्य विषय क्या है?

३. परतीर्थिक मान्य चार धर्मवाद कौन-से हैं?

४. देव और नारकों का आहार क्या होता है?

५. निर्ग्रन्थों के साथ श्री गौतमस्वामी के हुए संवाद में से कोई १ संवाद लिखिए।

६. अर्थदण्डप्रत्ययिक क्रिया किसे कहते हैं?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. कौन-से साधु शरण के अयोग्य है?

२. स्वजनों द्वारा असंयमी जीवन के लिए विवश करने के प्रकारों का निरूपण कीजिए।

३. भगवान महावीर की श्रेष्ठता 'महावीर स्तव' अध्ययन के आधार पर कीजिए।

४. भाव मार्ग साधना के सूत्र कौन कौन-से हैं?

५. पौण्डरिक अध्ययन में प्रथम पुरुष की मान्यता का निरूपण कीजिए।

६. संज्ञी का दृष्टान्त क्या है?

७. सांख्यमतवादी एकदण्डिकों के साथ हुई आर्द्रकमुनि की तात्त्विक चर्चा का निरूपण कीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. ग्रंथ के आधार पर जगत् कर्तृत्ववाद का निरूपण अपनी भाषा में कीजिए।

२. उपसर्ग परिज्ञा अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. समाधि प्राप्त साधु की साधना के मूल मंत्र कौन कौन-से हैं?

२. क्रियास्थान अध्ययन के आधार से धर्मपक्ष का विवरण कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **प्रथम खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

शास्त्रवार्ता समुच्चय

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित रिक्तस्थानों की पूर्ती कीजिए। **(५)**

१. स्थूलता रूप कार्य की उत्पत्ति के लिए कोई भी ..... कारण चाहिए।

२. भूतों का उक्त रूपांतरण विशेष ..... को जन्म देता है।

३. स्वभाव शब्द का वास्तविक अर्थ है ..... सत्ता।

४. लेकिन दूध तथा दही दोनों ..... कहलाते हैं।

५. कार्य को जन्म देना ..... का स्वभाव है।

प्रश्न क्र. २. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. शास्त्र वार्ता समुच्चय	–	अ. माध्यस्थ भावना
२. मोक्ष प्राप्ति	–	ब. ग्रंथकार विशेष
३. महामति	–	क. विनाशी पहलू
४. पर्याय	–	ड. वनवासी
५. शबर	–	इ. अनुष्टुप

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित वाक्यों में से गलत शब्द निकाल कर सही शब्द लिखिए। **(५)**

जैसे – एक रूपवान वस्तु मूर्त नहीं बन सकती। गलत शब्द – रूपवान, सही शब्द – अमूर्त।

१. जो वस्तु ज्ञेय हैं वह किसी व्यक्ति के अनुमान का विषय है।

२. कुछ विकल्पात्मक ज्ञान सम्यक् भी हो सकते हैं।

३. वचनयोग का कारण अहिंसा है।

४. सुख का कार्य शुभकर्म बंध है।

५. दर्शन एक स्वसंवेद्य वस्तु है।

प्रश्न क्र. ४. ये दृष्टांत किसको समझाने के लिए दिये गए है, लिखिए। **(५)**

जैसे – शैलेश/पर्वतराज का दृष्टांत – ज्ञानयोग की पराकाष्ठा को समझाने के लिए।

१. कुमारी के स्वप्न का दृष्टांत

२. आकाशकुसुम का दृष्टांत

३. दो चन्द्रमाओं का दृष्टांत

४. उत्तम वैद्य का दृष्टांत

५. स्फटिक का दृष्टांत

P.T.O

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अनेकांतवाद २. परमात्मा ३. सामान्य

४. उत्पत्ति ५. संसार ६. तृष्णा

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्ही ५ सवालों के संक्षेप में जवाब दीजिए। **(१०)**

१. जगत की घटनाओं के असाधारण कारण युक्त तत्त्व कितने हैं और कौन-से?

२. उत्पादक सामग्री कितने भागों में बंटी है और कौन-सी?

३. ईश्वर की कितनी बातें अप्रतिहत है और कौन-सी?

४. दर्शन के पर्याय भूत शब्द कितने हैं और कौन-से?

५. मोक्ष के साधन कितने हैं और कौन-से?

६. चरित्र के गुण कितने है और कौन-से?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. केवल दृष्टांतों की सहायता से किसको सिद्ध नहीं किया जा सकता सयुक्तिक समझाइए।

२. क्षणिकवाद में कार्यकारण ज्ञान की अनुपपत्ति कैसे होती है इसे सयुक्तिक सिद्ध कीजिए।

३. भूतचैतन्यवादी कितने भूतों से इस जगत् की उत्पत्ति मानते हैं और कैसे स्पष्ट कीजिए।

४. सर्वज्ञ की सत्ता सिद्ध करने के लिए कौनसे तर्क दिये है, उन्हें अपनी भाषा में लिखिए।

५. ब्रह्माद्वैतवादी की मान्यता क्या है, वह सही है या गलत इसे सयुक्तिक सिद्ध कीजिए।

६. ज्ञान और क्रिया इन दोनों के माध्यम से ही मोक्ष की प्राप्ति संभव है सिद्ध कीजिए।

७. 'भाव ही अभाव बन जाता है' यह बात कैसे अयुक्त है स्पष्ट कीजिए।

८. द्रव्य और पर्याय का स्वरूप अपनी भाषा में स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न क्र. ८. किसी १ सवाल का सटीक जबाब लिखिए। **(१५)**

१. शब्द और अर्थ के संबंध के बारे में किसकी किसकी क्या मान्यता है, सटीक लिखिए।

२. शून्यवाद की मान्यता सही है या गलत अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न क्र. ९. किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. तीसरे स्तबक का सार अपने शब्दों में लिखिए।

२. नौवें स्तबक का सार अपने शब्दों में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

अनुयोगद्वार सूत्र

प्रश्न १. निम्न लक्षण किस रस का है, लिखिए। (५)

१. तपश्चरण में धैर्य होना
२. संमोह होना
३. नेत्र आदि विकसित होना
४. अविकारी होना
५. निर्वेद होना

प्रश्न २. निम्नलिखित समूह में से भिन्न शब्द को पहचानकर लिखिए। (५)

१. निक्षेप, निधि, एकार्थ, निरुक्ति
२. बोंडज, बल्कज, अंडज, मलय
३. क्षपणा, उपक्रम, अनुगम, नय
४. निक्षेप, आनुपूर्वी, समवतार, वक्तव्यता
५. सत्पदप्ररूपणा, क्षेत्र, अन्तर, प्रमाण

प्रश्न ३. जोड लगाइए। (५)

अ स्तम्भ		**ब स्तम्भ**
१. प्रथमा विभक्ति	–	अ. उपदेश क्रिया
२. द्वितीया विभक्ति	–	ब. संप्रदान
३. चतुर्थी विभक्ति	–	क. आमंत्रित करना
४. षष्ठी विभक्ति	–	ड. निर्देश
५. अष्टमी विभक्ति	–	इ. स्व–स्वामित्व प्रतिपादन

प्रश्न ४. निम्न स्थापना प्रमाण निष्पन्न नाम का कोई १ उदाहरण लिखिए। (५)

१. नक्षत्र नाम २. देव नाम ३. पाषण्ड नाम
४. जीवित हेतु नाम ५. आभिप्रायिक नाम

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। (१०)

१. द्वन्द्व समास २. कर्मधारय समास ३. द्विगु समास
४. तत्पुरुष समास ५. अव्ययीभाव समास ६. एकशेष समास

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। (१०)

१. श्रुतज्ञान को अभिधेय कोटि में क्यों ग्रहण किया गया है?

P.T.O

२. लोकोत्तरिक नोआगम भावश्रुत कौन-से हैं?

३. उत्कीर्तन पश्चानुपूर्वी लिखिए।

४. क्षायोपशमिक और उपशम भाव में क्या अंतर है?

५. सामायिक का लक्षण क्या है और उसका अधिकारी कौन होता है?

६. व्यंतर देव-देवियों की स्थिति कितने काल की है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. अर्थाधिकार का स्वरूप क्या है?

२. औपम्यसंख्या का निरूपण कीजिए।

३. समय की सूक्ष्मता को उदाहरण द्वारा समझाकर उसके समूहनिष्पन्न काल विभाग का वर्णन कीजिए।

४. तिर्यंच-पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना का निरूपण कीजिए।

५. त्रिकसंयोगी सान्निपातिक भावों की वक्तव्यता कीजिए।

६. द्विनाम के स्वरूप को संक्षिप्त में समझाइए।

७. आवश्यक के पर्यायवाची नामों पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तृत जवाब लिखिए। **(१५)**

१. संग्रहनय सम्मत अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी का स्वरूप समझाइए।

२. सप्तनाम के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ज्ञान गुण प्रमाण का निरूपण कीजिए।

२. आय किसे कहते हैं? उसके स्वरूप को विस्तार से समझाइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

भगवती सूत्र – शतक १ से १४

प्रश्न १. एक शब्द में जबाब लिखिए। (५)

१. छद्म का अर्थ क्या है?
२. अरिहंत भगवान क्या कहकर भावतीर्थ को नमस्कार करते हैं?
३. जिससे वस्तुतत्त्व का यथार्थ ज्ञान हो उसे क्या कहते हैं?
४. विमला दिशा के आदि में क्या है?
५. हस्तिनापुर नगर के बाहर कौन–सा उद्यान था?

प्रश्न २. अंको में जबाब लिखिए। (५)

१. सातवी नरक की उत्कृष्ट अवगाहना कितने धनुष की है?
२. केवली समुद्घात का समय कितना है?
३. वायुकाय के कितने शरीर कहे गए हैं?
४. कार्मण शरीर में कितने स्पर्श पाये जाते हैं?
५. माया के लिए समानार्थक शब्द कितने बताये हैं?

प्रश्न ३. उचित पर्याय चुनकर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए। (५)

१. अवधिज्ञान के ..... अध्यवसाय होते हैं। (संख्यात, असंख्यात, अनंत)
२. ..... नगरी में वरुण नागनप्तृक रहता था। (वैशाली, राजगृही, चम्पा)
३. एकेन्द्रिय जीव को ..... योग ही होता है। (मन, वचन, काया)
४. ज्योतिष्क देवों के ..... लाख विमानवास हैं। (संख्यात,असंख्यात, अनंत)
५. बहुरत नामक निह्नवदर्शन के प्रवर्तक ..... है। (गोशालक, जमाली, रोहगुप्त)

प्रश्न ४. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. सातावेदनीय	अ. शंखवन उद्यान
२. पावस ऋतु	ब. २५ लाख नरकावास
३. आषाढी पौर्णिमा	क. अनुकम्पा करने से
४. अलाभिका नगरी	ड. १८ मुहूर्त का दिन
५. शर्कराप्रभा पृथ्वी	इ. श्रावण और भाद्रपद

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। (१०)

१. अनिदा वेदना २. निर्हारिम पण्डितमरण ३. चण्डा परिषद्

P.T.O

४. कर्म निषेक ५. उपयोग आत्मा ६. अबाधा अन्तर

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. नरदेव और देवाधिदेव की स्थिति लिखिए।

२. अखण्डित संयम तथा खण्डित संयमवाले का उत्पाद बताइए।

३. वेदनीय कर्म के उदय से कितने और कौनसे परीषह आते हैं?

४. कृष्णराजियां कितनी हैं? उनके नाम लिखिए।

५. असुरकुमार देव किस प्रयोजन से वृष्टि करते हैं?

६. एक ही पदार्थ में अस्तित्व, नास्तित्व दो विरोधी धर्म कैसे रहते हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. ब्राह्मी लिपि को नमस्कार क्यों किया गया है?

२. प्राणामा प्रवज्या का अर्थ लिखते हुए तापस ने प्रवज्या के बाद क्या संकल्प किया?

३. मतिज्ञान के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

४. प्रमाणकाल का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

५. ५६ अन्तर्द्वीपों का वर्णन कीजिए।

६. जमाली के सिद्धांत को बताते हुए सत्य सिद्धांतों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. जीव संस्थान, अजीव संस्थान के भेद प्रभेदों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

२. लोक और अलोक की विशालता का निरूपण कीजिए।

३. आराधना का स्वरूप बताते हुए भेद प्रभेदों को स्पष्ट कीजिए।

४. जीव अल्पायु और दीर्घायु किन कारणों से बांधता हैं?

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२२ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सन्मति तर्क प्रकरण)

प्रश्न १. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। **(५)**

१. जैन शास्त्र में ..... ज्ञान है। (चार, पांच, छह)

२. जैन शास्त्र में ..... के लिए स्थान ही नहीं है। (नयवाद, एकान्तवाद, अनेकान्तवाद)

३. संसारी जीव अर्थात् ..... चेतना। (आत्मधारी, कर्मधारी, देहधारी)

४. पर्याय ..... के आविर्भूत होनेवाले कार्य है। (भक्ति, मुक्ति, शक्ति)

५. प्रवृत्ति ही ..... के दुर्नयत्व का बीज है। (प्रमाणों, नयप्रमाणों, नयों)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. जीव	–	अ. क्षायिक भाव
२. केवली	–	ब. विलक्षण बुद्धिजनक
३. प्रतिनियत स्वरूप	–	क. सदृश बुद्धिजनक
४. विजातीय	–	ड. पारिणामिक भाव
५. सजातीय	–	इ. निश्चित स्वरूप

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. द्रव्यास्तिक और पर्यायास्तिक की दृष्टि में वस्तुएं कैसी है?

२. सत्कार्यवाद को दूषित करने के लिए बौद्ध क्या कहते हैं?

३. उत्पाद, विनाश और स्थिति का कालभेद बताइए।

४. जैन दृष्टि से देशना का क्या स्थान है?

५. ज्ञान और दर्शन की व्याख्या लिखिए।

६. 'दिवाकर' शब्द से क्या बोध मिलता है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. एक नय के पक्ष में संसार–मोक्ष, सुख–दु:ख, घट सकते है या नहीं?

२. प्रतीत्यवचन किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

३. जिनवचन की कुशल कामना करते हुए ग्रंथकार ने कौन कौन–से विशेषण दिए हैं?

४. व्यंजनपर्याय और अर्थपर्याय का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. पांच कारणवादों को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

२. निम्नलिखित गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए।

अ. पुरिसज्जायं तु पडुच्च जाणओ पणवेज्जं अण्णयरं।
परिकम्मणानिमित्तं दाएही सो विसेसं पि।।

ब. दव्वट्ठिओ वि होऊण दंसणे पज्जवट्ठिओ होइ।
उवसमियाईभावं पडुच्च णाणे उ विवरीयं।।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली भाग २)

प्रश्न ६. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में दीजिए। **(५)**

१. संशय और विपर्यय दोषों से मुक्त निष्कलंक ज्ञान क्या है?
२. मल्लवादी ने किस ग्रंथ की रचना की?
३. काका कालेलकर किस संग्रहालय के संचालक रहे?
४. सिद्ध आत्मा कहां विराजमान है?
५. संलेखना का उत्कृष्ट काल कितना है?

प्रश्न ७. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. अध्यात्मवादी दर्शन परमात्मा को ..... मानते हैं। (निर्विकारी, अविकारी)
२. चेतन तत्त्व ..... के स्थान पर है। (गुलाम, शासक)
३. मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति ..... कोटाकोटी सागरोपम है। (७०, २०)
४. ..... परम्परा में आत्महत्या से स्वर्ग प्राप्त होता है। (जैन, वैदिक)
५. विनोबा भावे ने ..... आंदोलन किया। (असहयोग, भूदान)

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. उपनिषदों में अनैकान्तिक दृष्टिकोण कितने उपलब्ध होते हैं? कौन–से?
२. संलेखना कब करनी चाहिए?
३. हरे रंग की विशेषताएं बताइए।
४. आचार्य देवेन्द्रमुनिजी म. सा. ने ज्ञान के क्षेत्र में क्या–क्या कार्य किया?
५. सम्यग्दर्शनी और सम्यग्दृष्टि में क्या अंतर है?
६. सर्वधर्म समभाव का आशय क्या है?

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. आगम युग की विशेषताएं संक्षेप में लिखिए।
२. धर्मवृक्ष का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
३. पदार्थ गुणों का समूह है, इसे स्पष्ट कीजिए।
४. मन के प्रकार बताते हुए श्लिष्ट मन का वर्णन कीजिए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निवृत्तिबादर, अनिवृत्तिबादर और सूक्ष्म गुणस्थान को स्पष्ट कीजिए।
२. स्वभाव चतुष्टय क्या है, इसे समझाइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५४९ **द्वितीय खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२२ **समय: घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

विशेषावश्यकभाष्य

प्रश्न १. निम्न तक्ता कर्म की स्थिति के आधार पर पूर्ण कीजिए। **(१०)**

कर्म	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
१. ज्ञानावरणीय कर्म	अन्तर्मुहूर्त	.....
२. दर्शनावरणीय कर्म	.....	.....
३. वेदनीय कर्म	.....	३० क्रोडा क्रोडी सागरोपम
४. मोहनीय कर्म	अन्तर्मुहूर्त	.....
५. आयुष्य कर्म	.....	.....
६. नाम कर्म	.....	२० क्रोडा क्रोडी सागरोपम
७. गोत्र कर्म	आठ मुर्हूत	.....
८. अन्तराय कर्म	.....	३० क्रोडा क्रोडी सागरोपम

प्रश्न २. निह्नव और उनकी मान्यता की जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तम्भ		ब स्तम्भ
१. जमालि	–	अ. सामुच्छेदिक
२. अश्वमित्राचार्य	–	ब. जीवप्रदेश
३. गंगाचार्य	–	क. त्रिराशिक
४. तिष्यगुप्त	–	ड. बहुरत
५. रोहगुप्त	–	इ. द्विक्रिय

प्रश्न ३. निम्न वाक्य पढकर कौन–सी समाचारी है, पहचानिए। **(५)**

१. 'यह विपरीत है' यह जानकर मिथ्यादुष्कृत देना।
२. आचार्य से कहना – 'आप जो यह कह रहे हो वह सत्य है।'
३. आहारादि द्वारा दूसरे साधुओं को निमंत्रण देना।
४. स्थानविशेष से बाहर जाते समय की समाचारी।
५. कोई इष्ट कार्य करने की आज्ञा लेना।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. द्रुहिल दोष २. व्याहत दोष ३. अपद दोष
४. व्यवहित दोष ५. समास दोष ६. रूपक दोष

P.T.O

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. यति और गृहस्थ के प्रत्याख्यान के कितने भांगा है?

२. गोष्ठामाहिल को किसके विषय में विप्रतिपत्ति हुई? उसके लिए उन्होंने किसके साथ प्रश्नोत्तर किए?

३. भावकाल किसे कहते हैं? उसके कितने और कौन-से भांगा हैं?

४. निम्न गाथा का अर्थ लिखिए।

नेरइय-देव-तित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा होंति।
पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति।।

५. मतिज्ञान प्राप्ति का जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर कितना है?

६. मनःपर्यव ज्ञान का विषय क्या है? वह कितने काल तक का जानता है?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. क्या अवग्रहादि उत्क्रम, व्यतिक्रम या नियतक्रम से होता है? स्पष्ट कीजिए।

२. संज्ञीश्रुत किसे कहते हैं? उसके भेदों को समझाइए।

३. क्षपक श्रेणी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

४. साध्वी प्रियदर्शना ने किस मत को स्वीकारा? ढंक श्रावक ने उन्हें किस घटना से प्रतिबोध दिया?

५. नाम-स्थापनादि चार प्रकार के नमस्कार का स्वरूप समझाइए।

६. सिद्ध की ऊर्ध्वगति को विस्तार से समझाइए।

७. निम्न द्वारों के अनुसार किसमें कितनी सामायिक की प्राप्ति होती हैं, समझाइए।

अ. योग द्वार ब. ज्ञान द्वार क. वेद द्वार

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ग्रंथ के आधार से नैगम नय के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

२. सुधर्मा गणधर को क्या संशय था? उसका समाधान भगवान ने कैसे किया?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का सटीक जवाब लिखिए। **(१५)**

१. क्या ज्ञान और क्रिया दोनों मोक्ष का कारण है? विस्तार से समझाइए।

२. ग्रंथ के आधार से अवधिज्ञान के स्वरूप को विस्तार से समझाइए।